Pothi.com

नित नवल सुशील

गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल सुशील

गजेन्द्र ठाकुर

ॐ

नित नवल सुशील

गजेन्द्र ठाकुर

NIT NAVAL Sushil: A book on criticism- critical analysis of the works of Sushil, language-Maithili by Gajendra Thakur

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson: Videha: Maithili Literature Movement

ISBN: 978-93-340-2974-1

© 2023-2024 प्रीति ठाकुर

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

आवरण: ओम गजेन्द्र ठाकुर

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि, बिनु लिखित अनुमतिक ऐ पोथी बा एकर कोनो अंशकेँ छायाप्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक कोनो प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

अध्याय ०

नित नवल सुशील (**परिचय**) (**पृ. २-३**)

पूर्वपक्ष

अध्याय १

मैथिलीमे छद्म समीक्षा (**१-३**) (**पृ. ५-४८**)

अध्याय २

घराड़ी (उपन्यास) (१९७३) (**पृ. ४९-६०**)

अध्याय ३

गामबाली (उपन्यास) (१९८२) (**पृ. ६१-७१**)

अध्याय ४

भामती (नाटक) (२०१३) (**पृ. ७२-७६**)

अध्याय ५

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६) (**पृ. ७७-८३**)

उत्तरपक्ष

अध्याय १

सिद्धान्त (पृ. ८५-११९)

अध्याय २

सिद्धान्तोत्तर (पोस्ट-थ्योरी) (पृ. १२०-१२१)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X** क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

अध्याय ०
नित नवल सुशील (परिचय)

सुशील चन्द्र झा प्रसिद्ध सुशील
ग्राम+पोस्ट- दुलहा, जिला- मधुबनी (बिहार, भारत)।
जन्म- ६जनवरी १९४२
माता- स्व. गोदावरी देवी।

पिता-स्व. सच्चिदानन्द झा।

जीवन-यापन- साहू जैन कम्पनी लिमिटेड कोलकाताक बजबज शाखामे २००४ धरि कार्यरत।

गतिविधि: 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' क तत्त्वावधानमे सन् १९८० मे बिहार सरकार द्वारा उर्दूकेँ द्वितीय राजभाषा बनेबाक विरोधमे दिसम्बर १९८० मे जनसमूहक संग प्रदर्शन।

वर्तमान पता- गवर्नमेण्ट कॉलोनी ब्लॉक ओ, प्लॉट-३, सुभाष उद्यान मोड़, बजबज, कोलकाता- ७००१३७ **(**भारत**)**।

सुशीलक रचना संसार: हुनकर रचना संसार छन्हि- घराड़ी (उपन्यास) (१९७३), गामबाली (उपन्यास) (१९८२), भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३) आ अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६) आ ई चारू पोथी हुनकर अनुमतिसँ विदेह पेटारमे उपलब्ध अछि लिंक **www.videha.co.in/pothi.htm** पर।

पूर्वपक्ष

अध्याय १
मैथिलीमे छद्म समीक्षा (१-३)

तत्त्वचिन्तामणिकारक गंगेशक “ऑनर किलिंग” केना रमानाथ झा आ उदयनाथ झा “अशोक” द्वारा कएल गेल तकर विषयमे विस्तारसँ हम अपन पोथी “मैथिली समीक्षाशास्त्र भाग-२” मे लिखने छी। मुदा ऐ तरहक काज बन्न नै भेल छै, रूप बदलि-बदलि कऽ अखनो ई काज निरन्तर भऽ रहल छै। सुशीलकेँ केना कतिआयल गेलन्हि से बुझबामे ई अध्याय सहायक हएत।

१

कमलानन्द झा "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) मे लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।" तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरो चढ़ा सकै छिऐ आ ककरो उतारि सकै छिऐ- केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा केर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादूबला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे। अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे। प्रस्तुत अछि सुशीलक

'गामबाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर। पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामबाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि- "विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।" आ उपन्यास आरम्भ। *गामबालीक मृत्यु आ तखने झमेला, गामबालीक दाह-संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?*

कमलानन्दझाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहै छियनि? कारण ओ छद्म समीक्षक छथि। विदेहक ३६२म आ ३६३म अंक (क्रमसँ १५ जनवरी २०२३ आ ०१ फरबरी २०२३) मे जखन हम मैथिलीक छद्म समीक्षाक प्रश्न उठेलौं तखन कमलानन्द झा अपन अज्ञानता वा अहंकार भावनावश अपन अपन अज्ञानता नहिये मानलनि, ओ अपन ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकारक अपन छद्म समीक्षकत्व परिचये देलनि। समदिया मिथिला (४ जनवरी २०२४ अंक) मे ओ अपन आलेख (एकरा समीक्षा आलेख कहब अनर्गल हएत) “दाग: स्थापित-बोधमे हिलकोर” मे ओ छद्म समीक्षाक लक्षणक अन्तर्गत लिखै छथि- “एहन बात नहि जे दागसँ पहिने मैथिलीमे अन्तरजातीय विवाहपर उपन्यास नहि लिखल गेल हो। मुदा दागसँ पूर्व ब्राह्मण लड़की आ चर्मकार दलित (चर्मकार समाज) लड़काक संग विवाहकेँ केन्द्रित कए लिखल गेल उपन्यास हमरा सोझाँसँ नहि गुजरल छल। जाहि विषयपर चर्चो अनर्गल मानल जाइछ

ओहि विषयपर खुलि कए उपन्यास लिखब असाधारण साहसक बात। लेखक गौरीनाथ ई मानैत छथि जे समतापरक समाज बेटी-रोटिक सम्बन्धसँ बनि सकैत अछि।”

से कमलानन्द झा केर २०२१ मे देल वक्तव्य माने-

"मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

सँ २०२४ केर वक्तव्य-

“एहन बात नहि जे दागसँ पहिने मैथिलीमे अन्तरजातीय विवाहपर उपन्यास नहि लिखल गेल हो। मुदा दागसँ पूर्व ब्राह्मण लड़की आ चर्मकार दलित (चर्मकार समाज) लड़काक संग विवाहकेँ केन्द्रित कए लिखल गेल उपन्यास हमरा सोझाँसँ नहि गुजरल छल।”

पूर्ण रूपसँ से कमलानन्द झा केर ब्राह्मणवादी अहंकारक अन्तर्गत अछि, २०२१ क समीक्षक आ २०२४ केर समीक्षक दुनूमे ईमानदारीक घोर अभाव। माने आब श्रेय अन्तरजातीय विवाह केन्द्रित उपन्यास नै वरन ब्राह्मण लड़की आ चर्मकार लड़का जँ विवाह केने रहितय सुशीलक उपन्यासमे तखने ओ सुशीलकेँ मान्यता दइतथि! खएर, गामबालीमे विवाह भेबे नै केलै, ओ लिव-इन रिलेशन रहै, सेहो ब्राह्मण स्त्री (बियाहल आ विधवा) आ यादव

लड़का (अविवाहित- *बियाह भेलो छन्हि आ नहियो- बियाह ठेङासँ नापि कऽ भेल छन्हि- सोलकन्हमे अहिना होइ छै। ओत्तऽ सगाइ चलै छै, भरिसक कत्तौ कऽ लेलकै।*) केर बीचमे, सेहो गाममे, आ जखन गामबाली मरलि तखन ओकरा पन्द्रह बर्खक बेटा सेहो रहै। आ से गामबाली (उपन्यास) १९८२ मे प्रकाशित भेल।घराड़ी (उपन्यास) १९७३ मे प्रकाशित भेल रहय जइमे लड़का ब्राह्मण रहय आ लड़की मलाह। एतऽ भाषायी शिक्षा सेहो भेटत। अनावश्यक 'क' आ 'त' केर प्रयोग सुशील १९७३ मे सेहो नै करै छला, पी.डी.एफ.मे **(**विदेह पेटारमे उपलब्ध**)** जतऽ शुरूमे ई आयल छै तकरा ओ पेनसँ काटि देने छथि, बादक फर्मा ठीक छै। ऐ उपन्यासमे मलाहक लड़की आ ब्राह्मणक बेटाक प्रेम सम्बन्ध भेटत (उपन्यासक अन्तमे ओ ब्राह्मणक जेनेटिक लड़की सिद्ध भेल)। तँ की ई सिद्ध होइए जे, जे भाषायी रूपसँ फरिच्छ अछि ओ आगाँक सेहो सोचैए, ओकर विषय-वस्तु सेहो आगाँ दिसुका सोच लेने होइ छै। मूलधारामे ई दुनू निपत्ता भेटत। से दुलहा गामक उदयचन्द्र झा 'विनोद' जे कि मेडियोकर छथि आ प्रतिक्रियावादी विचारधाराक छथि (विदेहक शरदि**न्दु** चौधरी विशेषांक आ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक दुनूमे हुनकर छल-छद्म शरदिन्दु आ प्रेमलता जी अभिलेखित केने छथि), से मूलधारामे स्वीकृत भेलथि मुदा ओही दुलहा गामक सुशील जे भाषा, विचार, रचनाक विषय आ रचनाक स्तर सभमे हुनकासँ बहुत आगाँ छथि, हुनके जातिक छथि, से कतिआ देल गेला, मूलधारामे ओ अस्वीकृत केना नै

होइतथि? छद्म समीक्षक सभकेँ तँ हुनकर नामो नै सुनल छन्हि बा ओ सभ ऐ तरहक स्वांग करै छथि।

ओना की मिथिलामे अन्तर्जातीय विवाहपर चर्चा नै होइत अछि जेना कमलानन्द झा कहै छथि- "जाहि विषयपर चर्चो अनर्गल मानल जाइछ ओहि विषयपर खुलि कए उपन्यास लिखब असाधारण साहसक बात।"

दूषण पञ्जी ऐ तरहक विवरणसँ भरल अछि। मुदा रमानाथ झा आ उदयनाथ झा "अशोक" जे काज गंगेश उपाध्यायक संग केलन्हि सएह कमलानन्द झा आ आन समीक्षक केलन्हि "सुशील"क संग।

गंगेश उपाध्याय प्रसंग

४९.

१८८/२	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँई	*रत्नाकरक-मातृक (अज्ञात)*	गंगेश
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर	
			जीवे	

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- **चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि**

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक mōmō गंगेश

"तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध"।।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ.।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

पञ्जी सात प्रकारक होइत अछि-मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण उतेढ़ आ अस्वाजन्य पत्र पञ्जी।

दरभंगा नरेश माधव सिंह शाखा प्रणयन पुस्तकक आदेश देलन्हि। एहिसँ पहिने मूल पञ्जी सभक लेल समान रूपेँ बनैत छल। आब सोति, जोग आ पञ्जीबद्धक हेतु फराक शाखा पञ्जी बनाओल जाए लागल ('उप-टीप' (सोतिपुरा), नगराम (पछिवारि पार), गोत्र पञ्जी, पत्र पञ्जी, ई सभ एहि पोथीमे मिथिलाक्षरमे अंकित अछि। गोत्र पञ्जीमे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि। पत्र पञ्जी लगभग ५०० वर्ष पूर्वसँ प्रचलनमे अछि। एहिमे मूलग्रामक उल्लेख रहए लागल। दूषण पञ्जीमे वंशमे आएल तथाकथित क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। बहुत बादमे एकर चर्च संभव होइत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित वंश एकर दुष्परिणामसँ बाँचल रहए। उतेढ़ पञ्जीमे सपिण्डक निवृत्तिक ज्ञान होइत अछि-छह पुरखाक उल्लेख प्राप्त होइत अछि। मात्र रसाढ़-अररियाक पञ्जीमे स्त्रीगणक नामक उल्लेख पञ्जीमे भेटैत अछि।

पञ्जीमे उपलब्ध आधुनिक सामाजिक जीवन: (दूषण पञ्जी)

अंकन आ लिप्यंतरण प्राचीन पञ्जीक संग करबाक काज सन २००० ई. क चैत मासँ प्रारंभ कएल गेल। गोत्र पञ्जी मध्य गोत्र

व मूलक विवरण, पत्र पञ्जी मध्य अपत्यक ज्ञान तथा दूषण पञ्जी मध्य वंशमे आएल तथाकथित दोषक ज्ञान होइत अछि। प्राचीन पुस्तक मध्य ४५०ई. सँ अद्यावधि प्रचलित शैक्षणिक उपाधि संबंधक ज्ञान होइत अछि। लिप्यंतरण करबाक अवधिमे अनुभव भेल जे मिथिलाक इतिहास बोध कतैक उच्च प्रकारक रहल अछि। पञ्जिक पुस्तक मात्र अधिकारै तकबाक लेल प्रारंभ नहि भेल, अपितु मिथिलाक लोक अभाव ग्रस्त रहितौ, तत्कालीन शासकक वक्र दृष्टि सहितो मिथिलाक शैक्षणिक स्थिति, धर्मशास्त्रिय विवेचनाक क्षमता, साहित्यिक रचनाक योग्यता कला कौशलक प्रवीणता कोन प्रकारक छल एहि सभपर प्रकाश देखल। लिप्यन्तरण भेला संता वर्तमानकालीन दुनिया, जे भूमण्डलीकरणक दौरमे अछि, जानि सकत जे मिथिलांचलक सांस्कृतिक विविधता की छल, इतिहास बोध कोन प्रकारक छल- एहि सभ वस्तुकेँ दुनियाक पटलपर राखल जाए। दुनियाक कोनो समाजमे एतेक विस्तृत भूभागमे पसरल मनुष्यक वंशावली १५०० वर्षसँ अधिके समयसँ एहि तरहें सांगोपांग नहि लिखल गेल अछि जाहि तरहें मिथिलाक लोक विपन्न रहितो परिचय संग्रह करैत रहलाह, ईमानदारीपूर्वक अपन पुरखाक शिक्षा, तथाकथित क्षरण आ सम्बन्धक विवरण कलाबोध प्रवास-आप्रवास संचित करैत रहलाह, से अद्भुते अछि।

ब्राह्मण खाहे श्रोत्रिय होथु वा तथाकथित जैवार विशेषाधिकार, विशेष बंधन किनको हेतु नहि। जे समाज तथा कथित रूपें

जयवारक संज्ञा सँ विभूषित मिथिलाक लोक प्राचीन कालहिं सँ भारतक आन-आन सभ्यता ओ संस्कृतिक अपेक्षा उदार माना ओ नमनशील रहल अछि, एहि ठाम कोनो प्रकारक धार्मिक कट्टरपन स्थाई भाव नहि। सुधारक गुंजाइश सतत् बनौने रखने अछि, एहि ठाम जँ कखन कोनो काल मे खाहे कोनो प्रकारक जातिक ववंडर उठल हो परंच विद्वेष स्थाई भाव नहि राखल। अपन-अपन कालक पैघ सँ पैघ घटना कालातीत भए विस्मृत होइत रहल अछि, तकर प्रमाण थिक मिथिलाक पञ्जी उपांग- दूषण पञ्जी। कोनो कालक दलमलित करएबला घटना (Burning Question) थोड़बहि समयक बाद समाज ओ मस्तिष्क सँ हटि जाएत।

पाली मूलक- देवशर्म्मसुत कान्हमक विवाह बुधवाल मूलक गोविन्दे सुत दामूक विवाह सरिसब मूलक श्रीनाथ सुत चक्रपाणिक विवाह दरिहरा मूलक भीम सुत उमापतिक विवाह सोदरपुर मूलक श्रीहरि सुत हरिनाथक विवाह हरिअम वासुदेव सुत कृष्णकदेवक विवाह पनिचोभ मूलक मधुकरक विवाह- अज्ञात वंश ओ जातिमे। सरिसव मूलक भवनाथ पौत्र कमलनयन पुत्र किशाईक विवाह - वलियास चमरु सुत गंगाधरक कन्याममे। चमरूक अपन विवाह अज्ञात कन्यासँ। अर्थात किशाईक सासुक वंशक कोनो ठेकान नहि। एहि किशाईक सन्तान मिथिलाक अनेक गाम मे पसरल छथि। परंच आइ समाज ओहि तथ्यकेँ उचिते रूपेँ विस्मृत कए चुकल अछि। एहि रूपक अनेक घटना अछि- यथा बुधवाल मूलक माधवक पौत्री भीमक कन्याक विवाह, जाहि लागिसँ अनेक घर

व्याप्त अछि। सतलखा रामनाथसुत जगन्नाथक मात्रिक घुसौत उधोरण सुत रतनूक मात्रिक, पाली होराई सुत रामक मातृक सकराढ़ी मूलक वेणी सुत राधवक मात्रिक, सोदरपुर मूलक पाँखू सुत चान्दक मात्रिक, अलय मूलक दिनकर सुत हरिकरक मात्रिक, तिलय मूलक श्रीपति सुत विदूक मात्रिक इत्यादि देवदासी परम्पराक छलीह अस्तु अज्ञात मानल गेलीह परंच हुनका लोकनिक सन्तान आइ समाजमे समादृत छथि। एहि प्रकारक उदाहरण पाँजि मे भरल पड़ल अछि जे आब कालातीत भेला पर कोनो वंश पर कुप्रभाव नहि पड़त अपितु एहिना स्थित मे की निर्णय लेबाक चाही तकरा लेल मार्गदर्शन हएत।

आर उदाहरण: टेबुलक (१-९७) क नीचाँमे एहिमेसँ किछु उदाहरणक विस्तृत व्याख्या अछि।

१.

सरिसव १७८१/	वलियास चमरू गंगाधरक मातृक	सरिसव	सकराढी	पनिचोभ	दरिहरा	पाली	नरवाल
भवनाथ		नाथू	गांगू	कान्ह	हेलू	होराई	चान्द
कमलनयन किशाई	अज्ञात २३८॥०५	विशो	गोगे	रूद	चान्द	रामक मातृक	देवघर

२.

वुधवाल	पबौली	सतलखा	जगन्नाथक मातृक	घुसौत	रतनूक मातृक	दरिहरा	पाली	रामक मातृक	नरवाल
जाटू	भीम	रामनाथ		उधोरण	अज्ञात) (	हेलू	होराई	अज्ञात) (	चान्द
माधव भीमसुता १७८/	लक्ष्मी	जगन्नाथ अज्ञात) (		रतनू		चान्द	राम		देवधर

२									

३.

माण्डर	सोदरपुर	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम
रतिपति चन्द्रपति	देवे	रत्नधर	लगाई	वंशधर	कान्ह	जयपति	दूवे
गोढिसुता १/७१(निम्नकुल)	पाँखू	भवदत्त	नरसिंह			सुपे	राम

४.

सरिसव १८६	कर महा	सकराढी	राघवक मातृक	सोदरपुर	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम
नोने	नरहरि	वेनी	(अज्ञात)	देवे	रत्नधर	लगाई	वंशीधर	कान्ह	जयपति	दुवे
श्रीनाथ चक्रपाणि	मति	राघव		पाँखू	भवदत्त	नरसिंह			सुपे	राम

सोदपुर १७७/२	वलियास	गंगाधरक मातृक	सरिसव	सकराढी	पनिचोभ	दरिहरा	पाली	रामक मातृक	नरवाल
मतिकर	भमरू	अंतर्जातिय	नाथू	गांगे	कान्ह	हेलू	हेलू		चान्द

६

पवौली भानुदत	एकहरा	जगति	सोदरपुर	चान्दक मातृक	अलय	माण्डर	सुरगन	पचही	पकलिया	सिम्भुनाम
सुधापति	सुरपति	नोने	पाँखू	(अज्ञात)	रत्नधर	लगाई	वंशीधर	कान्ह	जयपति	दुवे
केशव सुता १९६७/	लक्ष्मीनाथ	होरे	चान्द		भवदत्त	नरसिंह			सुपे	राम

७.

सोदरपुर	करमहा	माण्डर	अलय	हरिकरक मातृक	दरिहरा	नीमा टकवाल	सुईरी	गदहा पंडोली
गदाधर	रामनाथ	केशव	दिनकर	(अज्ञात)	नरसिंह	दामोदर	परशुराम	अरविन्द
विशो	महेश	जगतू	हरिकर		केशव	रविशर्म्म	गोरी	निधि
कुमरसुता १८४२/								

८.

हरिअम	उदनपुर	माण्डर	पचही	करही	राउड दरिहरा	लहण्डा
गांगू	दामू	सुरसर	स्थिति	अदितु	शुक्ल विशो	बुधाई
केशव	पागू	हरि	साहब	साठू		
दामूसुता अंतर्जातिय						

९.

कोचराज पत्नी	खण्डवला	खौआल	फनन्दह	वलियास	बहेराढी	माण्डर
सोहागो २०८१/	सुरपति	कोने	हरिनाथ	विभाकर	वराह	सागर
	दुवे	नोने	रविनाथ	गुणाकर	गुणाकर	स्थिति
	चन्द्रपति सुता कोचराज पत्नी					

१०.

पवौली	घुसौत	दरिहरा	धारूक मातृक	वहेराढी	माण्डर
शिवदत्त	अमरू	नन्दन	(अज्ञात)	आंगू	सागर
रूपदत २०८ २/	जीवाई	धारू		रूद	स्थिति
वाशुदेवसुता					

११.

पवौली	एकहरा	जगति	सोदरपुर	पाली	सतलखा	गंगोली	डगरक माता	नदाम	यवनी
भानुदत्त	सुरपति	नोने	पाँखू	दुवे	दिवाकर	डगर	यवनी दौलति जहाँ	धन ञ्जय	दौलति जहाँ ४३
सुधापति	लक्ष्मी नाथ	होरे	चान्द	हरिकर	गौरीश्वर	गंगाधर			
केशवसु						हरिह			

ता १९६७/						र			

१२.

कुजौली	खौआल	महिन्द्रवाड पाली	लाखूक मातृक	गंगोली	डगरक माता	नदाम	यवनी
गोपाल २१६१/	गोविन्द	लाखू यशोधर	दौलतिजहाँ	डगर	दौलति जहाँ	धनञ्ज़य	दौलतिजहाँ
वंशवर्द्धन	विशो			गंगाधर			
वलभद्रसुता							

१३.

खण्डवला	माण्डर	पाली	दरिहरा	बहेराढी	जमुनी	माण्डर	धारेश्वरक माता
चान्द चन्द्रपति/	काशी	नोने	गुणे	गुणे	राम	धारेश्वर	(अज्ञात)
महेश	भीम	बाटू	अनन्दू	अफेल	गोनू	माधव माने	
गोपाल							

१४.

गोढिक	सरिसव	घुसौत	गंगोर	वलहा	मधुकर
सागर	गांगू	रतिकांत	हारू	सुधाकर	संतति
तनया २१६२/	रत्नपाणि	गुणाकर	वरदत्त		
	रघुपाणिसुता (गोढिमाता)				

१५.

दरिहरा	सोदरपुर	दरिहरा	घुसौत	तेरहुता	नरवाल	रतिक माता
भोला	शंकर	खाटू	दामोदर	लाखू	नोनाई	(अज्ञात)
मनसुख	गंगाधर	नरपति	हरि		रति	
यशुसुता						

१६

सोदरपुर	खौआल	सोदरपुर	दरिहरा	पनिचोभ	चान्दो	तिलय	खौआल	सोदरपुर
राघव	पूरखू	नागू	धारू	रतन	कामेश्वर	श्रीपति	नोने	हरिदत्त
रत्नपति २१५१/	हरिहरक-माता	दुवे	राम	रामकर	माधव	विदूक-माता	ढोढे	देवदास

	(देवदासी)							
यदुनाथ						अज्ञात) (		

१७ जानिक देवदास .

वुधवाल	खौआल	जलीवाल	माण्डर	कुरहनि	तिलय श्रीपति	खौआल	सोदरपुर
चान्द २१५ २/	गीरू	जीवे	देवादित्य	गुणेश्वर	विद्यापतिक - (देवदासी)माता	नोने	हरिदत्त
भानू	हरखू	थेग	नाथू			ढोढे	
सुधापति							

१८ जानिक देवदास .

सोदरपुर	पाली	सुरगन	दरिहरा	जीवेक - माता	तिलय-श्रीपति	खौआल	सोदरपुर
लाखन	ज्ञान	रवि	जीवे	देवदासी	लाखूक-माता	ढोढे	हरदत्त
जनार्दन २१४१/	वाटू	वाचस्पति	अमरू		देवदासी		
चतुर्भूजसुता १०२०१/							

१९ जानिक देवदास .

सोदरपुर	माण्डर	हरिअम	माण्डर	करमहा	खौआल	सोदरपुर
पशुपति	यशोधर	सोनी	नन्दन	पहकर जागेक माता (देवदास)	ढोढे	हरदत्त
श्रीहरि २१४२/	दामू	देवनाथ	रघु		हारूक-माता	
हरिनाथ					अज्ञात	

२०.

जानिक	पवौली	वुधवाल	वलियास	वभनियाम	मताउन	रकवाल	तिलयश्रीपति -
देवदास २१३१/	सभापति	पराण	धारू	होरे	धर्मू	कामदेव	विद्यापतिक-देवदासी)माता (
	गोप	नारायण	श्रीरामक-देवदासी)माता (	मनसुख	हरिपति	उधे	

	रतिपति						

२१ .

जानिक	दरिहरा	पवौली	बुधवाल	खौआल	जलिवाल	माण्डर	कुरहनि	तिलय-श्रीपति
देवदास २१३/२	रामनाथ	विद्यानाथ	मानू	गीरू	जीवे	देवादित्य	गुणीश्वर	विद्यापतिक-देवदा)माता (सी
	रघुनी	गुणपति	सुधापति	हरखू	थेघ	नाथू	विद्यापति	
	हरिदेव ४७३/							

२२.

पश्चिम देश सँ	माण्डर	करमहा	खौ आल	सोदरपुर	वभनियाम	सकराढी	दरिहरा	यमुगाम	पुरहदी
आगत २१२१/	लटाउँ	रघु	मित्र कर	शक्तू	गहेश्वर	टूनी	लक्ष्मीनाथ	कीर्तिवास	मतिश्वर
	होराई	शिव	जीवे	उधोरण	होरे				धृतिकर
	मधुसुदन-अज्ञात)सुता (कुल								

२३.

पश्चिम देश सँ	माण्डर	खण्डवला	दरिहरा	बहेराढी	खौआल	जालय
आगत	चन्द्रपति	दीनू	भवे	वराह	हरिहर	रतिधर
२१२२/	गोढि	गुणाकर	मेधू	नोने	रति	मतिकरमाता) (अज्ञात
	शिव					

२४

चर्मकार	तल्हनपुर	टकवाल	दरिहरा	पञ्चोभ	मेरन्दी	ब्रह्मपुर	बैजूक-माता

आनन्दा २१११/	गढवय	जीवधर	पाठक	जगन्नाथ	परभू	बैजू	आनन्दा
	रवि	गहाय	हरि			दिवाकर	
	मितूसुता २५३ ६/		हरिहर				

२५

सोदरपुर	माण्डर	फनदह	नदाम
अफेल	धारू	हारू	कान्हा
दिवाकर	विश्वनाथकमाता - पुत्री-आनन्दाक	सोन	जयकरकमाता - पुत्री-आनन्दाक
रघु २१११११/			

२६

सतलखा बुद्दिकर	बुधवाल मुथे	सोदरपुर	टकवाल	नदाम	सतलखा
२०९१/	गोविन्द रघुनन्दनसुता - अज्ञात कुल	पशुपति हरिहर	गणपति चान्द	कान्हविवाह - वसाउन अज्ञात	बुद्धिकर
				हरखू	

२७

करमहा	सोदरपुर	माण्डर	गाउल करमहा	वलियास	मोनारी	पाली	कुरिसमा	केउटराम पण्डोलि
गोविन्द	वेणी	मेघ	लागे	गणपति	रूद	समटू	श्रीकर	गणपति
नोने २०९११/	जगन्नाथ	बामन (माता) अज्ञात	शंकर	दिनपति		वंशी	रवि	चान्द
देवनाथ								

२८

विधवा	सोदरपुर	माण्डर	गाउल	वलियास	मोनारी	पाली	कुरिसमा	केउटराम पण्डोली
	वेणी जगन्नाथ	मेघ वामन-माता अज्ञात	लागे शंकर	गणपति दिनपति	रुद	समटू वंशी	श्रीकर रवि	गणपति चान्द

२९

२०७/१	खण्डवला	बुधवाल	बुधवाल	माण्डर	टकवाल	वलियास	ब्रह्मपुरा	मेरन्दी	कोर्थुआ

रजक धरम	महेश गोपाल माधव	गणप ति गोपी	धीरू माता-रजकी भवानीना थ	बुद्धिक र भवना थ	केशव रविद त्त	केशव गोपाल	माँगु गाँगु	कान्ह नरसिं ह	जादू

३०

२०७११/	हरिअम	वलियास	नरवाल	सतलखा	सुरगन	त्रिलाढी	डीह दरिहरा
रजक धरम मानिकी	सोम वासुदेव ज्ञानी	राम गोविन्दक-माता रजकी	पराउँ उधे	कान्हा विभू-मात्रिक रजक परम्परा	भगव रघु	रत्नाकर	रुद्रानन्द विद्यानिधि

३१

१७९१/	सोदरपुर	दरिहरा	पाली	नरवाल
	रविनाथ दूवे मासे	हेलू चान्द	होराई रामकमाता - अज्ञात	चान्द देवधर

३२

१७९/II	करमहा	सोदरपुर	दरिहरा	घुसौत	दरिहरा	पाली
	भानू हरखू राघव	विधुपति रामेश्वर	मतिकर सभापति-माता अज्ञात	धारू उधोरन	हेलू चान्द	होराई रामक माता

३३

१८०/I	सोदरपुर	टकवाल	यमुगाग्म	टकवाल	सुइरी	गदहा पण्डोलि
	विदू ओहरि बाबू	भवदेव गंगाधर-मातृक अज्ञात	गणपति जूड़ाउन-माता अज्ञात	रविशर्म पराउँमाता - अज्ञात सूयन	परशुराम गौरी	अरविन्द निधि

३४

१८०/II	सोदरपुर	माण्डर	बेलउँच	खौआल	घोसियाम	गदहा पण्डोलि
	हाउँ लाखन जनार्दन	मेधाकर पिताम्वर	महिधर खखनू	दामोदर रुद	माँगनि वागेक माता-(अज्ञात)	अरविन्द लान्हि चान्द

३५

१८१/I	सोदरपुर	सतलखा	वभनियाम	माण्डर	यमुगाम	सकराढी	पाली	गदहापण्डोलि

	गदाधर ध्रूवान न्द	काशी रामच न्द्र	सुरपति माने	विष्णुप ति दामू	रघुपति ऊँमाप ति	चाँडो हाल्ले श्वर	देवश र्म कान्ह	अरविन्द निधिनिषिद्धकु) (ल

३६.

१८१२/	वुधवाल	दरिहरा	पचही	कोरड़ा	गदहापण्डोलि		
	रति	सीधू	रतनाकर	कान्ह	अरविन्द - (निषिद्धकुल)		
	गोविन्द	राम	शीरूक-माता	गागे	हरिकर		
	दामू						

३७.

१८२१/	सरिसव	करमहा	सकराढी	पनिचोभ	माण्डर	यमुगाम	नीमा	मुसरी	गदहापण्डोलि
	नोनी	नरहरि	वेणी	हरिकर क-माता अज्ञात	वागीश्वर	रघुपति	टकवाल	परशुराम	अरविन्द निधि निषिद्धकु) (ल
	श्रीनाथ	मति	राघव	महथू	शीरू		दामोदर	गौरी	
	चक्रवाणि						रविशर्म्म		

३८.

१८२२/	सोदरपुर	माण्डर	हरिअम	माण्डर	वुधवाल	मताउन	गदहापण्डोलि	
	पशुपति	यशोधर	सोन्हि	नन्दन	राम	भीम	अरविन्द - (निषिद्धकुल)	
	श्रीहरि	दामू	देवनाथ	रघुक-माता	नाथू	उमापति	निधि	
	हरिनाथ			(अज्ञात)			शीरू	

३९.

१८३१/	सोदरपुर	पाली	माण्डर	पचही	माण्डर	गदहापण्डोलि	
	बसाउन	महाई	मांगु	रत्नाकर	कान्ह	अरविन्द	
	उमापति	माधव	रति	अफेलक-माता	गांगेमाता-	निधि- (निषिद्धकुल)	
	बाँके			(अज्ञात)	(अज्ञात)	हरिकर	

४०.

१८३२/	हरिअम	दरिहरा	वुधवाल	सकराढी	पनिचोभ	माण्डर	यमुगाम	नीमा टकवा	गदहापण्डोलि

								ल	
	सोम	दामू	रघु	महाइ	मधुक र	वागी श्वर	रघुप ति	दामो दर रविश र्म्म	अरविन्द
	वासुदे व कृष्ण देव	कृष्ण दाश	माध व	मणीषक मातृकअ) (ज्ञात	हरिक रक माता	शीरू			निधि- निषिद्ध) (कुल

४१.

१८४१/	हरिअम	उदनपुर	माण्डर	पचही	करही	राउढ़	लहन्दा	शुदी
	गांगू	दामू	सुरसर	स्थिति	अदितू	दरिहरा	दुधाई	
	केशव	पागू	हरि	साहेब	साँचू	शुक्लविशो		
	दामू					अंतर्जातिय		

४२.

१८४/ २	सोदरपु र	करमहा	माण्ड र	अलय	दरिहरा	नीमा	सदूरी	गदहापण्डो लि
	गदाधर	रामना थ	केशव	दिनकर	उधोर ण नरसिंह	टकवा ल	परशुरा म	अरविन्द
	विशो	महेश	जगतू	हरिकरक माता-	केशव	दामोदर	रवि	निधि- निषिद्धकुल) (
	कुमर			(अज्ञात)		रविशर्म		

४३

१८६ १/	पवौ ली	एकहरा	जग ति	सोदर पुर	अल य	मा ण्डर	सुरग न	पच ही	पकलि या	सिम्भु नाम
	भानूद त्त	सुरपति	नोने	पाँखू	रत्न धर	लगा ई	वंशी धर	का न्ह	जयप ति	दूवे
	सुधाप ति	लक्ष्मी नाथ	होरे	चान्द क- माता	भवद त्त	नर सिंह			सूपे	राम
	केशव			अज्ञा) (त						

४४.

१८६ २/	सरिस व	करम हा	सकरा ढी	सोदर पुर	अल य	मा ण्डर	सुरग न	पच ही	पकलि या	सिम्भु नाम-

										करमहा
	नोने	नहरि	वेणी	देवे	रत्न धर	लगा ई	वंशी धर	का न्ह	जयप ति	दूवे
	श्रीनाथ	मति	राघव क-माता	पाँखू	भवद त्त	नर सिंह			सूपे	राम
	चक्रपा णि									

४५.

१८७/ १	सोदरपु र	पाली	सोदरपु र	खौआ ल	पवौ ली	वलिया म	गंगोली	नवरंगाअंतर्जाति) (य
	वसाउ न	रघुप ति	बाबू	रघुपति	सुपन	दूवे	वरदत्त	कोउयार
	पशुप ति	जशा ई	शिवक-माता	दूवे	देवद त्त	शक्ति	सोमद त्त	श्रीपति
	नरहरि		अज्ञात) (					दहिमत वाशुदेव

४६.

१८७/ २	सोदरपुर	हरिअम	माण्डर	खण्डव ला	वलिया स	गंगोली	नवरंगा	दहिभ त
	शंकर	वेणी	माचो	श्रीहरि	दूवे	वरदत्त	कोइयार	वाशुदे व
	गोविन्द	जूड़ाउ न	जोरक-माता	गुदहरिक माता-	शक्ति	सोमद त	श्रीपति	
	रघुनन्द न		अज्ञात) (				अज्ञात) (	

४७.

१७७१/	सोदरपुर	वलियास	सरिसव	सकराढी	पनचोभ	दरिहरा	सुण्डिपार पाली	
	मतिकर	भमरू	नाथू	गोगे	कान्ह	हेलू	हेलू	
	भीम	गंगाधरक-माता	विशो	गागे	रूद	चान्द	रामक-माता	
	नाथ	(अज्ञात)					(अज्ञात)	

४८.

१८८ १/	ताँत नी	सोदरपुर	सकराढी	जाल य	खण्डव ला	भराठी	जालय	खण्डव ला	भदुआ ल पागू

	आझो	हलधर	गोविन्द	गिरपति	लान्हि	सकराढी	जयशर्म	नरदेव	कोइयार राम
		धारू	कल्याणक माता-अज्ञात) (	मन्नु	विभाकरक माता-	नरसिंह	विष्णु शर्म		
		श्रीनाथ सुता ताँती जाति मे विवाह			अज्ञात) (	भाष्कर			

४९.

१८८२/	चर्मकारिणी	माण्डर	वभनियाम	छादन	
तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँई	रत्नाकरक-(अज्ञात)मातृक	गंगेश	
	वल्लभा	भवाइ	माहेश्वर		
			जीवे		

५०.

चर्मकारिणी	सोदरपुर	अलय	माण्डर	नरउन	पनिचोभ	खण्डवला	डीह दरिहरा	ब्रह्मपुर	कोरई
मेधा	शंकर	गादू	अफेल	मुशे	विद्यापति	रत्नाकर	मतिकर	मांगु	माण्डर
१८९१/	गोविन्द	श्रीनाथ	वासुदेव	जादू	रमापति	सुरपतिक-माता चर्मकारि) (णी			गांगू-मेधा
	परशुराम								

५१.

१८९१/१	सोदरपुर	पाली	माण्डर	सकौना	सकराढी	खण्डवला	डीह दरिहरा	ब्रह्मपुरा
	बसाउन पशुपति वाचस्पति भवानी-	महाई माधव	माँगू रति	बाढन दूबे	नारायण कर रामकर	रत्नाकर सुरपति-माता	मतिकर	मांगू मेधा

	माता चर्मकारिणी					अज्ञात		

५२

१९०१/ हड़िणी रुद्रमति	सोदरपुर	माण्डर	कुजौली	तिसूरी	खण्डवला	पाली	घोसियाम	
	डालू गादू विशो	गिरी गागे	कान्ह सुरपति	खोजो गूदी-माता अज्ञात हाड़ी	शिवदत्त शुभदत्त-माता अज्ञात	मतिश्वर	जगन्नाथ-रुद्रमति विवाह गोंग	

५३

१९०/II	नरउन	माण्डर	जमूनी	तिसूरी	डीह खण्डवला	नवहथ पाली	धोसियाम
	मधुकर रुचिकर टूने	गहाइ दिनकर	वीर	खाँजो	शिवदत्त शुभदत्त-माता अज्ञात	मतिश्वर	जगन्नाथ-रुद्रमति गोंग

५४

१९१/I	खौआल	वहेराढ़ी	माण्डर	सकौना	दिघोइ	पाली
पाली रजेश्वर सुता रजक	साधुकर श्रीकर विभाकरसुता	गोंगू ढोढ़े	विभू भानूकर	गोपाल गौरीपति	माधव जगाई	रतेश्वर विवाह अन्तर्जातीय

५५

१९१/II	खौआल	वहोराढ़ी	माण्डर	दिघोइ		
	साधुकर श्रीकर विभाकर	गांगू ढोढे	विभूमाता-भानुकर	सुरेश्वर-रजकक कन्या	रजकक विवाह हड़िनी रुद्रमतिक पुत्रीसँ	

५६

१९२/I	सोदरपुर	करमहा	एकहरा	खौआल	बेलउँच	माण्डर	कुरहनि	पकलिया
लगारी गोपाई	मणिधर राम वामदेव	रघुनाथ	राम गणपति	जाटू परान	दीनू थेघ	देवादित्य पाँखू	गुणीश्वर दीनू	श्रीकर
	गोपपुत्री	हरिनाथ						

	विवाह							

नरउन	गढ़ अलय	नरउन	गोरोहिनी
सोन कान्ह	रुद सुधाकर	सूज जगन्नाथ	कुलपति रातू

५७

१९२/II	सोदरपुर	बेलउँच	पाली	गंगोली	अलय	माण्डर	गोरहनी
	काशी गुणी शंकर	देवनाथ कृष्णा- माता अज्ञात	गोविन्द होरे	राम महाई	यशाई नारायण	हरिशर्म्म देशू	कुलपति रातू

५८

१९३/ I	हरिअ म	दरिहरा	बुधवा ल	सकरा ढ़ी	वहेरा ढ़ी	दरिह रा	वुधवाल	माण्ड र	गोरहि नी
	सोम वासुदे व कृष्णदे व	दामू कृष्णदा श	रघु माधव	महाई भनेश	दिनू रघु	भीम डाकू	रामादि त्य जोर	देशू लान्हि - माता अज्ञा त	परिस रा कुलप ति रातू

५९

१९३/II	सोदरपुर	घुसौत	माण्डर	जालय	भरेहा	पवौली	माण्डर	गोरहिनी
	मणिधर राम कृष्णदेव	रतनू भवाई	जीबधर कल्याण	जीवे राम	वंशीधर शीरू	जीवे सुरसर	आँगनि हरदत्त	परिसरा कुलपति रातू

६०

१९४/I चर्मकार हिरुआ	सोदरपुर	माण्डर	फनन्दह	पकलिया	अलई	बेलमोहन	
	अफेल दिवाकर रघुसुता	धारू विद्यानाथ (माता) अज्ञात	हारु सोने- (माता) अज्ञात	निधि	सुता- अन्तर्जातीय	परान गिरु- चर्मकार हिरुआक पुत्रीसँ	

६१

१९४/II तैलिक	खण्डवला	तिसौँत	पण्डोल	खजूरी	सकराढ़ी		

देवाई							
	महिपति कान्ह विष्णुपति	जीवेश्वर- माता अज्ञात नन्द	वासुदेव सुपन	पनिचोभ धनपति	चान्द	तैलिक देवाई अन्तर्जातीय	

६२

१९५ /I	करमौ लि	हरिअ म्ब	दरिह रा	फन न्दह	करमौ ली गंगो ली	पा ण्डे	पाली	चान्दो	फन न्दह	पाण्डो लि गांगो ली
	गंगो ली पाण्डे कर्म	माँदू गाँगु केशव सुता महापा त्रसँ विवाह	भव शर्म वर्द्ध मान	भीम नर सिंह	करम साधु कर	कर म	पमकर दुर्गादि त्य धरादि त्य पाण्डे करम	सूर्यक र हरादि त्य	भीम नर सिंह	

६३

१९५/II चर्मकार हिरुआ	वुधवाल	सकराढ़ी	पाली	माण्डर	पुनन्दह	पकलिया	अलय	बेलमोहन	
	शिरू मानू नारायण	रतिपति जसाउन	हरपति अमरु	दिनकर सुधे	शंकर	निधि	एसुता	परान गीरूचर्मकार - हिरुआ	
					हारु				

६४

१९६/I हड़िनी रुद्रमति रजक परम्परा	दरिहरा	करमहा	पवौली	वुधवाल	माण्डर	दिघोय	
	शक्तू जीवे रामदेवसुता	जोर भवनाथ	रुचिदत्त गादू	होरे उधेमाता-	विभू- -माता भाष्कर रामकर	सुरेश्वर- रजकक -कन्या विवाह हड़िनी रुद्रमतिक	

						कला अन्तर्जातीय	

६५

१९६/II रजक परम्परा	दरिहरा	पाली	माण्डर	दिघोइ			
अन्तर्जातीय	सोमेश्वर सिद्धेश्वर सुपन	श्रीधर रामदत्त- माता अज्ञात	दूबे सुपे	सुरेश्वर- रजकक -कन्या रजकक विवाह रुद्रमति कन्या			

६६

१९७/I चाम्पो यवनी	माण्डर	पचही	पवौली	पकलिया	तिरलाठी	करनैठा	कोइयार	
	कृष्णपति सूर्यपति भैरव	शंकर गणपति	मुरारी बागे	चारुदत्त गांगू	हरिकर दिवाकर	चक्रेश्वर राम	शक्ति- पत्नी चाम्पो यवनी	

६७

१९७/II रजकक परम्परा	सोदरपुर	हरिअम	उदनपुर	झंझारपुर पकलिया	
	भवे रघुपति रतिपति	विभू बसाउन	खाँतू पाँखूमाता - रजकक परम्परा	मानेमाता- लक्ष्मीधर	

६८

१९८/I	वुधवाल	पवौली	सतलखा	घुसौत	तेरहोत	कोइयार	भदुआल
	जाटू माधव भीम	भवदेव लक्ष्मी	रामनाथ जगन्नाथक माता	धोरण रतनू	श्रीकर सूपे- माता	लक्ष्मेश्वर जगन्नाथ	अदित्य भवानी

६९

१९८/II	सोदरपुर	करमहा	माण्डर	पंचोभ	महुआ	भदुआल
	गदाधर विशो	रामनाथ महेश	केशव जगतू-	रतिनाथ त्रिपुरे	गिरिपाणि रामपाणि	सूज

	कुमर		माता अज्ञात			

७०

१९९/I	सोदरपुर	सतलखा	वभनियाम	माण्डर	यमुगाम	सकराढ़ी	वहेराढ़ी	भदुआल
	गदाधर ध्रुवानन्द हरिकेश	काशी रामचन्द्र	सुरपति माने	विष्णुकान्त दामू	रघुपति उमापति	चाँड़ो-माता अज्ञात हल्लेश्वर	सोम होरे	हरिकेश

७१

१९९/II	वलियास	गंगोली	विठुआल	खौआल	तिरलाठी	भदवाल
	रघु रामनाथ नरहरि	रघु रामदेव	चान्द दशरथ-माता अज्ञात	दामोदर वासु	धनेश्वर बोध	अदित्य मानू

७२

२००/I	सोदरपुर	वुधवाल	जगति	नरउन	भदवाल
	गदाधर विशो भानू	धीरू रामनाथ	नोने मिसरू	डालू रुचिमाता - अज्ञात	आदित्य मानू

७३

२००/II	सोदरपुर	बहेराढ़ी	सोदरपुर	चकलिया	दरिहरा	पाली	पवौली
	श्रीकर रघुनाथ कृष्णदेव	उमापति परमानन्द	खेदू लाखू	रत्नधर हरिनाथ	रतीश्वर रघुनाथ-माता अज्ञात	गणपति रति-माता अज्ञात	नरसिंह चान्द-माता अज्ञात

७४

नरबंगा शाखा २०१/I यादव जयसिंह	माण्डर	पाली	खौआल	पवौलि	वलियास	गंगोली	नरबंगा	दहिभत
	शिवपति यज्ञपति अफेल	मुरारी पाँखू	रघुपति दूबे	सुपन देवदत्त	दूबे शक्ति	वरदत्त सोमदत्त	नोहरि श्रीपति-अज्ञात कुल	वासुदेव

७५

२०१/II यादव रहमू	खण्डवला	दरिहरा	वुधवाल	सोदरपुर	दरिहरा	फनन्दह	कुजौली	पकलिया	अलय	पंचोभ
	मदामो.मदर मविश्व.मम्भर हृषिकेश पत्नी यादव	जीवेराम देव	मोनि गणपति	भैरव ठकरु - माता अज्ञात	सूपे रातू	महनू कान्ह	विभू गुणे	भासे मानू	हीरे	हारू

७६

२०२/I	पण्डुआ	हरिअम	माण्डर	वहेराढ़ी	सतलखा	पचही	निचिता अलय	माण्डर	जालय	सिंहाश्रम
	जानू गोपाल यदुनाथ	नन्दन बूटन- माता अज्ञात	महेश रघु	बराह दीनू	भासे नोने	यज्ञपाणि रतिपाणि	गणेश्वर माधव	साहेब मुरारी	कीर्तिधर मूलधर	पाण्डे सरवे

७७

२०२/II	सोदरपुर	करमहा	माण्डर	अलय	माण्डर	जालय	सिंहाश्रम
	गदाधर बीसो कुमर	रामनाथ महेश	केशव जगतु	दिनकर हरिकर	सुरारी चान्दमाता - अज्ञात	कीर्तिधर मूलधर	पाण्डे सरवे

७८

२०३११/	सोदरपुर	सकराढ़ी	पाली	माण्डर	फनन्दह	पकलिया	अलय	बेलमोहन
	पाँखू पुरखू भवानन्द	माधव- माता यदुनाथ	हरपति अमरू	दिनकर सुधे	सोरे हारू	निधि	एसुता	परान गीरु- विवाह हिरुआ चर्मकारिन

७९

२०३१/ परम ब्राह्मण- (महापात्र)	घुसौथ	खौआल	कुजौली	मताउन दरिहरा	गढ़ अलय	डीह दरिहरा

२०५/II	वुधवाल	खौआल	बेलौंच	विस्फी	अलय	डीह दरिहरे	डीह दरिहरा
	परान मुरारी अनन्त	बाटू रतन	रघु अनन्त	रूपे धीरू- माता अज्ञात	जसाई रघु- माता अज्ञात गौरी	लक्षेश्वर होरे	लक्षेश्वर होरे- परमब्राह्मण

	केशव रुचि भवदेव	गौरी माधव	रामधर कृष्ण- माता अज्ञात	नारू बाटूमाता - अज्ञात	जसाई	लक्षेश्वर होरे- परमब्राह्मण

८०

२०४१/	सोदरपुर	वहेराढ़ी	सोदरपुर	चकलिया	विहरा दरिहरा	पाली	अलय	डीह दरिहरा
	श्रीकर रघुनाथ कृष्णदेव	उमापति परमानन्द	छेदू लाखू	रूपधर हरिनाथ	रूपधर रघुनाथ- -माता अज्ञात	गणपति रति- माता अज्ञात	महेश्वर जसाई	लक्षेश्वर होरे- परमब्राह्मण

८१

२०४/II	वुधवाल	माण्डर	जालय	कुजौली	मताउन दरिहरा	लय	डीह दरिहरा
	रति गोविन्द वांगु	श्रीमणि टेकी- माता अज्ञात	पागु सुधापति	गांगु रामधर	नारू बाटूमाता - अज्ञात	जसाई	लक्षेश्वर होरे- परमब्राह्मण

८२

२०५/I गुरुपत्नी	खण्डवला	करमहा	नरउन	तेरहोता	कुजौली	मराड़
	ज्ञानपति सुरपति दूवे	गंगेश्वर श्रीधर	गौरीश्वर मुरारी	भवादित्य राजू	शिव	भट्टभूषण- गुरुपत्नीसँ विवाह

८३

८४

२०६/I गंगोली परमब्राह्मण	सोदरपुर	सकराढ़ी	जालय	कुजौली	मताउन दरिहरा	अलय	दरिहरा
	पाँखू पुरखू	माधव- माता	सुन्दर यशोधर	गांगू रामधर	नारू बाटू-	महेश्वर जसाई	लक्षेश्वर- विवाह

	भवानन्द	यदुनाथ			माता अज्ञात		गंगोली परमब्राह्मण

८५

२०६/II	सोदरपुर	बेलौंच	पाली	गंगोली	अलय	दरिहरा
	काशी गुणी शंकर	देवनाथ कृष्ण- माता अज्ञात	गोविन्द होरे	राम महाय	जसाई नारायण- माता अज्ञात	लक्षेश्वर होरेविवाह - पथ पतिता कन्या

८६

२१६/I यवनी दौलत जहाँ पुत्री	सोदरपुर	खौआल	महिन्द्र वार पाली	गंगोली	खण्डवला	माण्डर	पाली	दरिहरा	बहेराढ़ी
	रघुपति रतिपति बलभद्र	गोविन्द बीसो	नाथू यशोधर	डगरू- माता अज्ञात गंगाधर	चन्द्रपति महेश गोपाल	काशी भीम	नोने बाटू	गुणे आनन्दु	गुणे अफेल- यवनीपुत्री सँ विवाह

८७

जमूनी	माण्डर	चकरहद	हरीनी दिघोय	त्रिपुरे	गोण्डि
राम गोढ़ि	धारेश्वर- माता अज्ञात माधव माने	माने हरिकण्ठ	धनन्जय	गोढ़ाई	गोण्डिगाउँ - पुरन्दर पुत्री

८८

२२७	महिषी वुधवाल	सोदरपुर	वलियास	करमहा	सकराढ़ी	पंचोभ	पवौली	पाली
	चान्द रामचन्द्र गरुड़ रमणी बालगोपाल मही	रुचि जयदत्त	रुद हरिनाथ रुचिनाथ	दुखन सतार	हरीश्वर धाने गोनू रामकृष्ण	वाचस्पति महेश	जानू धरमू हरि	कृष्णदेव मुकुन्द

८९

२२६/II	नरौन	पाली	पाली	दरिहरा	करमहा	एकहरा	माण्डर	सोदरपुर
	टूने गोनू हरिपाणि हरिनाथ प्राणपति	दामू गोपी	धीरू श्रीनाथ चीकू	गोपाल रतिदेव	पशुपति दशरथ रामचन्द्र परमानन्द	हरखू गोपी	नरहरि लक्ष्मीनाथ अभिमन्यु	हरखू जयराम

९०

२१८/I पश्चिम देशसँ आगत चाँरो	करमहा	सरिसव	वभनियाम	यमुगाम	पुरहदी
	गंगेश्वर राम हरिकर	गांगू रत्नपाणि	गोविन्द ऐंठो	कीर्तिवास नितिकरमाता - अज्ञात	मतीश्वर धृतिकर

९१

२१८/II	सोदरपुर	पाली	सोदरपुर	दरिहरा	खण्डवाला	वुधवाल	खौआल	ब्रह्मपुरा	पुरहदी
	नाथू वासुदेव श्रीपति	नरपति रुचि	थेघ यशोधर	धीरू लाखन	कुसुम धाने	वासू वागू	सूभे पाँथू	रघुनाथ माँगू	रातू

९२

२१९/I केरवाल शाखा	महिन्द्रवार पाली	गंगोली	दरिहरा	केरवाल पाली	मोरसण्ड करमहा
	भादू नाथूक माताअज्ञात-यशोधर	गंगाधर गदाधर	गोविन्द सिरू	जयदत्त गोपाल	ब्रह्मेश्वर स्थिति

९३

२१९/II	सोदरपुर	दरिहरा	पवौली	सुसैला	दरिहरा
	गोपीनाथ हाउँ जीवे	सुरसर वीर कुजौली मुरारी जागे	हरिहर शशिधर	सूरे माधव	लक्षेश्वर होरेविवाह - गंगोली पथ पतिता कन्या

९४

२२०/I वार्तिनी विधवा	पाली	पवौली	माण्डर	पाली	पुरिसमा	पंडौली
	हरि गोनि	बागे	सर्वाय	समरू	श्रीकर	गणपति

	सुधाकर	दूवनमाता - अज्ञात	श्रीकर	वंशी	रवि	चान्द- विध्वाक सन्तान

९५

२२०/II	हरिअम	सोदरपुर	करमहा	खौआल	जमुनी	खौआल	घोसियाम	सुरगण	होइयार
	नरहरि भवे मुरारि	राम भीम	हरिकर मीतू	सुधाकर बुद्धिकर	देवे महेश्वर	दास शशिकर	वशिष्ठ	देवशर्म्म नोने	शिवसिंह धाम

९६

२२१/I धीवर दासी	कुजौली	माण्डर	नरउन	माण्डर	सुरगण	निखुती
	जीवे महाय गोपीनाथ	प्रीतिकर शशि	शशि जीवे	भवादित्य गणपति	नारायण डालू	मंडनपत्नी - धीवरदासी

९७

२२१/II	माण्डर	करमहा	खौआल	बेलौँच	पाली	पचही	बलहा
	लटाउँ होराय मधुसूदन	रघु शिव	मीतू जीवे- माता अज्ञात	मित्रादित्य केशू	माधव गोप- विवाह दासी	इन्द्र भव	खाँजो दामू

टेबुल (१-९७) क उदाहरण १ क व्याख्या: गुणवति हिमशा जे आन जातिक रहथि, हिनकर विवाह वलियासमूलक चमरूसँ भेलन्हि, जाहिमे बालक गंगाधर भेलाह। एहिमे हुनकर संतति सरिसव मूलक नाथूसँ पुत्रीक विवाह- पुत्र विशो, फेर विशोक कन्याक विवाह सकराढ़ी मूलक गांगूसँ- ओहिमे बालक गोगे, गोगेक पुत्रीक विवाह पनिचोभ मूलक कान्हसँ ओहिमे पुत्र रुद, रुदक बेटीक विवाह दरिहरा मूलक हेलूसँ ओहिमे पुत्र चान्द, चान्दक पुत्रीक विवाह पाली मूलक होराईसँ जाहिमे पुत्र राम- रामक मातृक

अज्ञात। रामक सन्तान (पुत्री)क विवाह नरवाल मूलक चान्दसँ। तिनकर बालक देवधर जे पूर्णतः शुद्ध भेलाह (छअम पीढ़ीमे)। एहिना-

बहेराढ़ी सँ वराहसुत नोनेक विवाह खौआल हरिहर सुत रतिक विवाह माण्डर मूलक गोंढि सुत शिवक विवाह खण्डबलासँ दिनू सुत गुणाकरक विवाह दरिहरासँ मने सुत मेघक विवाह	पश्चिम दिशासँ आगत अज्ञात कुलशीलक कन्याक लागिमे भेलन्हि
तल्हनपुर मूलक रविसुत मिलूक विवाह टंकबालसँ जीवधर सुत गहाईक विवाह दरिहरा पा हरिसुत हरिहरक विवाह . पनिचोभ जगन्नाथक विवाह सोदरपुर दिवाकर सुत रघुक विवाह	चर्मकारिणी आनन्दाक सन्तानक लागि मे छलन्हि
नदामसँ कान्हक विवाह सोदरपुरसँ रतिपति सुत बलभद्रक विवाहक लागि खौआल गोविन्द सुत विशोक विवाहक लागि खण्डबला महेश सुत गोपालक विवाहक लागि	यवनी दौलति जहॉक सन्तानमे
खण्डबला सुरपति सुत दूवेक विवाहक लागि करमहा गंगेश्वर सुत श्रीधर नरउन गौरीश्वर सुत मुराठी सकराढ़ी भवादित्य सुत रामू कुजौली शिवक विवाह	माण्डर मराड़ मूलक भट्ट भूषण जे गुरू पत्नीसँ विवाह कएल तनिक सन्तानक लागिमे रहन्हि
वुधवालसँ परान पौत्र मुरारी सुत अनन्तक विवाह खौआलसँ वादू सुत रतनक विवाह बेलउँच रघु सुत अनन्तक विवाह विस्फीसँ रूपेक विवाह अलयसँ जसाईक विवाह	परम ब्राह्मण पुत्रीक संतानक लागि मे (महापात्रक) रहन्हि
सोदरपुर जीवेक विवाह दरिहरा सुरसर सुत वीरक विवाह माण्डरसँ सवाई सुत सुरसर क विवाह पालीसँ समरु सुत सुरसरक विवाह	वार्तिनी विधवा परम पथ पतिताक सन्तानक लागि मे छलन्हि

कुरिसमा सकराढ़ीसँ श्रीकर सुत रविक विवाह	
खण्डवला विश्वम्भर सुत हृषिकेशक विवाह दरिदरा जीवे सुत रामदेवक विवाह बुधवालसँ मणि सुत गणपतिक विवाह दरिहरासँ सुपे सुत रातूक विवाह फनन्दहसँ महनू सुत कान्हक विवाह	यादव रहमूक पुत्रीक सन्तानक लागि मे छलन्हि
सोदरपुर सँ पुरखू सुत भवानन्दक विवाह सकराढ़ी सँ माधवक विवाह माण्डरसँ दिनकर सुत सुधेक विवाह फनन्दह सँ सोरे सुत हारूक विवाह	चर्मकार हिरुआक पुत्रीक सन्तानक लागिमे छलन्हि
सोदरपुर मणिधर पौत्र रामसुत वासुदेवक विवाह करमहा रघुनाथ सुत हरिनाथक विवाह एकहरा रामसुत गणपतिक विवाह खौआल जादूसुत परानक विवाह बेलउँचसँ दिनूसुत थेघक विवाह बेलउँचसँ दिनूसुत	गोप पुत्रीक सन्तानक लागिसँ छल
खौआल श्रीकर सुत दिवाकर विवाह बहेराढ़ी गांगु सुत दोक विवाह सकौना गोपाल सुत गौरी पतिक विवाह दिधोय माधव सुत जगाईक विवाह छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति	रजकक कन्या हड़िनी रूद्रमतिक पुत्रीक सन्तानक लागिमे छलन्हि
सोदरपुर गोविन्द सुत परशुरामक विवाह अलयसँ गादू सुत श्रीनाथक विवाह माण्डरसँ अफेल सुत गादूक विवाह पनिचोभ सँ विद्यापतिसुत रमापतिक विवाह	चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि
खण्डबलासँ सुरपतिसुत दूवे सुत चन्द्रपतिक पुत्रीक विवाह	आसामक कोच राजवंशी राजा सँ छलन्हि पुत्रीक नाम सोहागो

[पंजीक हमर पोथीमे ओना तँ ११००० तालपत्रक जे.पी.जी.इमेज क डी.वी.डी. सेहो अलगसँ किनबाक व्यवस्था रहै आ ओइ डी.वी.डी.कैँ कबिलपुरक सगर राति दीप जरएमे हम बाँटनहियो रही, मुदा ओइमे जे दूषण पंजी रहै तकर कारण कतेक पंचैती भेल, कतेक गोटे सोझाँ आ फोनपर गारि पढ़लन्हि। अखनो बहुत गोटे पंजीमे ओकर चर्चासँ भितरे-भितरे गुम्हरैत रहैत छथि आ गपमे तामसे हाँफऽ लगै छथि जेना खून पीबि जेता। ऐ दूषण पंजीमे ब्राह्मणक आन जाति खास कऽ दलित आ मुस्लिमक संग विवाह, वा पतिक मृत्युक बाद विवाहक लिखित दस्तावेज छल। ओकरामे हेर-फेर केनाइ हमरासँ सम्भव नै छल। पंजीक पोथीमे शब्दशः एकर मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यंतरण भेल अछि। एतए हम मूल ताड़पत्र आ बसहा पत्रपर लिखल पंजीक लिंक दऽ रहल छी (विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर)।। संगमे दूषण पंजी- मूल मिथिलाक्षर लेख- ताड़पत्र सिंगल पी.डी.एफ. सेहो। कियो नै कहि सकैत अछि जे ऐ मे एक्को रत्ती अशुद्धि अछि। गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक ५ बर्ख बाद आ फेर हुनकर चर्मकारिणीसँ विवाह एतए वर्णित भेटत। ई वएह नव्य-न्यायक जनक गंगेश छथि। आनन्दा चर्मकारिणीसँ विवाह एतए सेहो भेटत जे हमरा द्वारा लिखित प्रेमकथा "शब्दशास्त्रम्"क आधार बनल (पहिने “जखन तखन” प्रेम कथा विशेषांकमे प्रकाशित, एकर हमरे द्वारा कएल अंग्रेजी अनुवाद The Science of Words

साहित्य अकादेमी, दिल्लीक पत्रिका Indian Literature मे प्रकाशित आ आब ई दुनू संस्करण हमर कथा संग्रह “पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल” मे संकलित)।

२

मैथिलीक छद्म समीक्षा (कमलानन्द झा प्रसंग- १)

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐ मे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि। एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहिये हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्रयादव जीक अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर
ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह।

राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङर धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त केलन्हि। सुभाष चन्द्र यादवजीक 'भोट' जे २०२२ मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर
ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहु ओ सुभाषजीक भगताशैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङरक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत

टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

३

मैथिलीक छद्म समीक्षा (कमलानन्द झा प्रसंग- २)

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखक पंकज झा पराशरक रिसर्च कहै छथि! एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम

विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङमे बी. टेक. १९६८ मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम.टेक. १९७० मे केने छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झाकेँ बुझऽमे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आगाँ संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककेँ दस-बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कवितामे प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री चोरि कऽ लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झाक आश्रय तकलन्हि, मुदा दुर्भाग्य! जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट

बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबा लेल वामपंथक शरण। एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

http://videha.co.in/pothi.htm

एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता। आब सिण्डीकेटेड समीक्षापर ई अन्तिम प्रहार अछि।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जल प्रांतर २०१७ (पृ. १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12 वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीरबांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीमनगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य

एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्दझा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

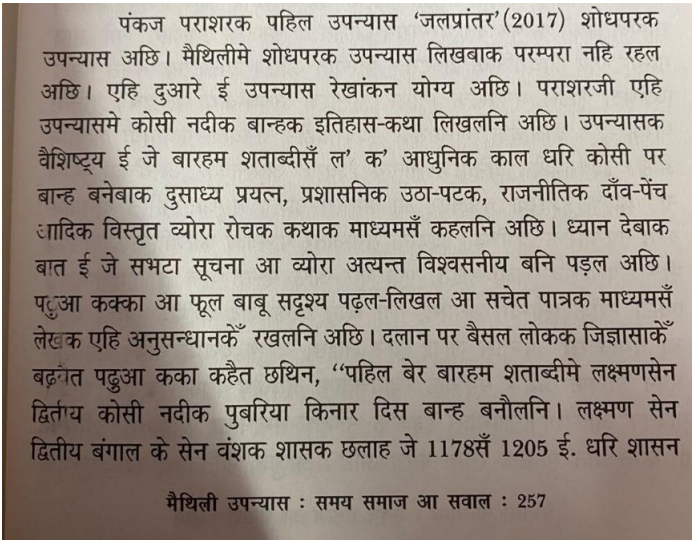

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत ब्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ ब्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

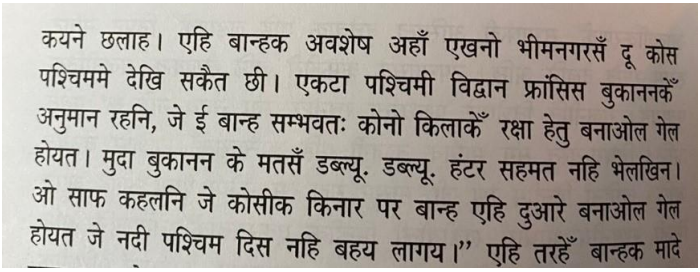

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह की भयावहता की एक झलक फिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की

फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थानपर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उसको इस बात का पता लगा कि सुलतान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०५)]:

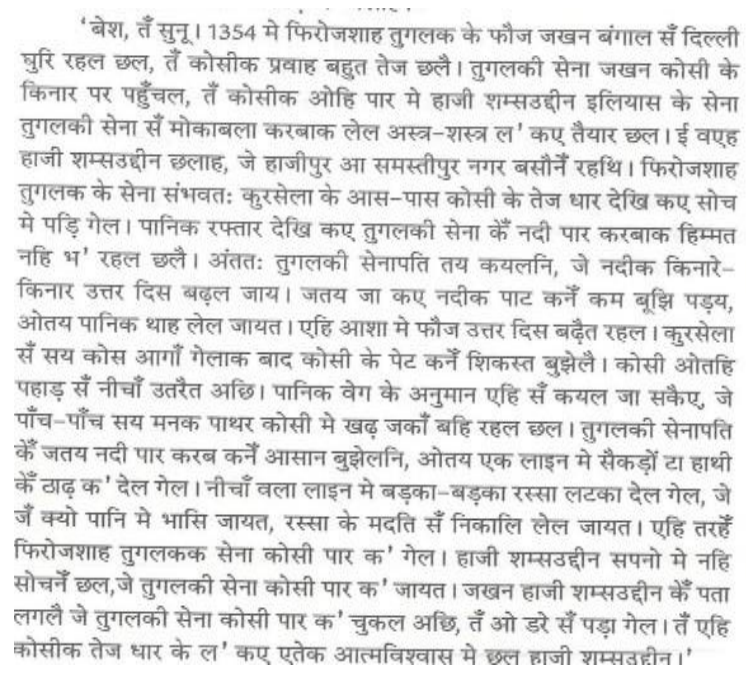

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैं नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैं जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैं ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैं पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(ई मात्र किछु उदाहरण अछि, चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) क "जलप्रांतर २०१७" पाइरेटेड पोथी अछि आ सम्पूर्ण पोथी दिनेश कुमार मिश्रजीक पोथीसँ निर्लज्जतासँ पैराक पैरा उठा कऽ अही तरहेँ भरल गेल अछि।)

अध्याय २
घराड़ी (उपन्यास) (१९७३)

ई उपन्यास अखिल भारतीय मिथिला संघ (बाबू साहेब चौधरी) द्वारा छापल गेल छल। बाबू साहेब चौधरीक समस्या नामसँ आमुख सेहो छन्हि। आ सुशील ई उपन्यास अपन मायकेँ समर्पित करै छथि। छोट-छीन लेखकीय वक्तव्यमे ओ अहाँकेँ मरुभूमिक यात्रा लेल चलैले कहै छथि, मुदा मरुद्यान सेहो छै, खजूर पानि जतऽ भेटै छै।

पाठक जीक दलानपर उपन्यास प्रारम्भ होइत अछि, दूटा सन्दूक एकटा चौकी, दूटा लगहरि महींस, एकटा गाय, आ एक जोड़ा बड़द। बाँझी घूरमे झिंगुड़ा दैत अछि, सुखायल जाड़निसँ बेशी ई सजीव बाँझी जड़ै छै, प्रकृतिक लीला!

आ उपन्यासकार सभटा सरंजाम केलाक बाद रतनक प्रवेश उपन्यासमे करबै छथि। मिलिट्रीमैन रतन।

एतऽ भाषायी शिक्षा सेहो भेटत। अनावश्यक 'क' आ 'त' केर प्रयोग सुशील १९७३ मे सेहो नै करै छला, पी.डी.एफ.मे जतऽ शुरूमे ई आयल छै तकरा ओ पेनसँ काटि देने छथि, बादक फर्मा ठीक छै। ऐ उपन्यासमे मलाहक लड़की आ ब्राह्मणक बेटाक प्रेम

सम्बन्ध सेहो भेटत। तँ की ई सिद्ध होइए जे, जे भाषायी रूपसँ फरिच्छ अछि ओ आगाँक सेहो सोचैए, ओकर विषय-वस्तु सेहो आगाँ दिसुका सोच लेने होइ छै। मूलधारामे ई दुनू निपत्ता भेटत। से दुलहा गामक उदयचन्द्र झा 'विनोद' जे कि मेडियोकर छथि आ प्रतिक्रियावादी विचारधाराक छथि (विदेहक शरदिन्द् चौधरी विशेषांक आ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक दुनूमे हुनकर छल-छद्म शरदिन्दु आ प्रेमलता जी अभिलेखित केने छथि), से मूलधारामे स्वीकृत भेलथि मुदा ओही दुलहा गामक सुशील जे भाषा, विचार, रचनाक विषय आ रचनाक स्तर सभमे हुनकासँ बहुत आगाँ छथि, हुनके जातिक छथि से कतिआ देल गेला, मूलधारामे ओ अस्वीकृत केना नै होइतथि? छद्म समीक्षक सभकेँ तँ हुनकर नामो नै सुनल छन्हि बा ओ सभ ऐ तरहक स्वांग करै छथि।

रतनक घराड़ी जोति लेल गेल छै, लालबाबू जोति लेने छथिन्ह। ओकर छोटका भाय अपने हिस्सा ने लिखत, रतनक हिस्सा कोना लालबाबू लिखबा लेलन्हि? लालबाबू बदलेन करैले तैयार छथि (आगाँ जा कऽ कारण रतन केस कऽ देने छै) मुदा रतनकेँ वएह घराड़ी चाही, दोसर ठाम उपटि कऽ किए जायत? मुदा ई सूचना औपन्यासिक विस्तारमे आगाँ जा कऽ खुजैए। ईहो जे रतन, पिताक मृत्युक बाद, मिलिट्रीमे चलि गेल आ गामसँ निपत्ता भऽ गेल जखन आ सेहो जखन ओ पन्द्रह बर्खक रहय। देह दशा बीस

बर्खक लागै, से ओ अपन उमेर बीस बर्ख बतेलकै, से मिलिट्री भर्ती लऽ लेलकै। पन्द्रह साल कोनो पते नै। ओकर भाय महादेव कोहुना लालबाबूक कृपापर अछि, पेट पोसि रहल अछि। माय आ कोरपोछुआ बहीन बाढ़िमे बहि गेलै। ओकर रोष स्वाभाविक। मुदा पाठकजी कैँ अपन गोटी खेलेबाक छन्हि, अभिराम झा कने फरिछायल गप कहै छथि। बुच्चन, पाठक जीक बड़का बेटा। बुच्चन सरओं खेलाइत अछि, सोझमतिया अछि, कोन बाँसक दाहा बनतै से आब लालबाबू बुझथिन्ह, से बजैए। पाठक जी जकाँ गोटी सेट करय नै अबै छै, से पाठकजीसँ मतान्तर सेहो छै। पाठकजीक पौत्री कुमकुमक प्रवेश करबै छथि उपन्यासकार। कुमकुमक बड्डु पैघ रोल आगाँ आबैबला छै, अखन तँ ओ कानि रहल अछि, ओकर टेरलिनक फ्राकमे आगि धऽ लेलकै, पाकि गेल। पाठक जी बिदा होइ छथि अस्पताल। पहिल खण्ड समाप्त।

बागमती कातक अस्पताल, लालबाबू (ललितेश्वर चौधरी)क प्रतापे, पाँच बीघा सोनक टुकड़ी हुनके देल। पाठको जीक योगदान, पाइसँ नै देहसँ। बुच्चुन आ ओकर युवा सेना धुनि कऽ श्रमदान देलक । आ ऐ परोपकारक कारण? हुनकर बेटा ओइ काल दरभंगामे डाक्टरी पढ़ि रहल छला, आ ओ आब अही अस्पतालमे छथि। दूरक सोच! आ कुमकुम कैँ पाठकजी लऽ जाइ छथि, अही अस्पताल जतऽ मलाह जातिक करुणा नर्स छै, आ लालबाबूक बेटा ब्राह्मण जातिक डॉ. बिनायक ओतऽ डाक्टर छै।

आ लाल बाबू सेहो अस्पताल पहुँचि जाइ छथि। हुनका ऐ सभ गपमे मोन नै लगै छन्हि, हुनकर मोन टाङल छनि ओइ गपपर, रतन जे भोरमे गेल रहन्हि पाठकजीक ओइठाम। दोसर खण्ड समाप्त।

तेसर खण्डक प्रारम्भ, ननु पोखड़िपर गप्प सड़क्का चलि रहल छै। पंचैती छै, रतन आ लालबाबूक बीच सुलह हेतै आकि नै? पाठक जीक छोटका बेटा मलय, वएह जे कुमकुमले टेरेलीनक फ्राक अनने रहै, आ लालबाबूक छोटका बेटा अजीत, दुनू बड़ा दिनक तातिलमे मुजफ्फरपुर कओलेजसँ गाम आयल छै, ओहो दुनू ओत्तऽ छै। विविध भारतीसँ बहीदा रहमान जयमाला प्रोग्राम प्रस्तुत कऽ रहल छथि। पी.डी.एफ.मे सुशील जी पेनसँ काटि कऽ अमीन सयानी केने छथि, मुदा अमीन सयानी बिनाका-सिबाका प्रोग्राम करै छला सीलोन रेडियोसँ, सैनिक भाइ लेल जयमाला विभिन्न कलाकार विविध भारतीपर होइए, अमीनो सयानी तकरा कऽ सकै छथि आ बहीदा रहमान सेहो, से हम प्रिण्टबला वर्सन लऽ कऽ चलि रहल छी। पंचैती धौत परीक्षा विजेता सुन्दर झा केर नामसँ स्थापित पुस्तकालयपर छै, ननु पोखड़िपर। लालबाबू बदलेन करैले तैयार छथि बरू दू कट्ठा बेसी देता मुदा रतनकेँ वएह घराड़ी चाही, ओ तमसा जाइए। आ खण्ड समाप्त।

चारिम खण्ड प्रारम्भ, रतनक छोटका भाइ महादेबक हत्या! रतनपर आरोप छै। ओ भागि जाइए। मुदा बुच्चन ओकरा पक्षमे

थानामे बाजैए जे जखन ओ ४-५ दिनसँ गाममे रहबे नै करय तँ ओ हत्या केना करत? ओकरा संगे ४-५ टा छौड़ो छै, फेर १०-१५ टा। पाठकजी अवाक छथि। लाल बाबू सन्न छथि। आ बतहन बाबू सभक मुखाकृति देखि रहल छथि। बतहन बाबू रतनक पक्ष बुच्चनसँ सुनने रहथि, आ बतहन बाबूक कहला हिसाबे बुच्चन बयान दैत अछि। पेंचपर पेंच। खण्ड समाप्त।

पाँचम खण्ड। ब्राह्मण डॉ. बिनायक आ मलाह नर्स करुणा। करुणा कहैए, ई विवाह असम्भव अछि, ओ नीच जातिक अछि, मलाहक बेटी अछि आ बिनायक पैघ लोक। बिनायक नै मानैए। आ...

पाँचम खण्ड। ब्राह्मण डॉ. बिनायक आ मलाह नर्स करुणा। करुणा कहैए, ई विवाह असम्भव अछि, ओ नीच जातिक अछि, मलाहक बेटी अछि आ बिनायक पैघ लोक। बिनायक नै मानैए। आ कहैए जे ओ की करत जे करुणाक हृदयसँ डर भागतै। मुदा करुणा ओकरा थोपड़ा कऽ बिदा भऽ जाइए। मुदा सूतलमे उपन्यासकार ओकरा तंग करै छथिन्ह सपना सुना कऽ, से प्रेम तँ ओकरो छैहे। आ एम्हर बिनायक तामसे विखसँ सविख अछि। ओ करुणाकेँ कायर बुझैए। मुदा उपन्यासकार एकटा लाठी लेने बूढ़ाक प्रवेश ओकर स्वप्नमे करबै छथिन्ह- जे बिनायककेँ कहै छथि जे जकरा बिनायक सबला बुझि रहल छथि ओ समाजक गन्हायल परिपाटीक चलते अबला अछि, आ अपन चक्र सुदर्शन आ त्रिशूल

हुनका देमय कहै छनि। साहसे टा नै, काजो कऽ कय देखबय कहै छन्हि, खाली झुट्ठेक प्रतिज्ञासँ की हएत? स्त्रीगण समाजकेँ विश्वास नै छै। मुदा बिनायक कहैए जे ओकर प्रतिज्ञा सत्य छै। ओ ई गप चिकरि कऽ कहैए जे ओ ई कइये कऽ रहत। आ ओकर भक खुजि जाइ छै। मलय आ अजीत बिनायक केँ घुरा लऽ जाइ छै।

छअम खण्ड- महादेवक हत्याक बाद ओकर श्राद्धक भोज लालबाबू नीक जकाँ केलन्हि। मुदा बतहन बाबू आ पाठक जी ऐ गुलंञ्जरक कारणसँ अपरिचित नै छथि। महादेवक हत्याक पाछाँ कोन व्यक्तिक हाथ छै, से बुझबामे हुनका सभकेँ कोनो भाङठ नै छन्हि। मुदा खुलि कऽ विरोध करबाक साधांश नै छन्हि। आ ओम्हर लालबाबू सेहो हिनका दुनूकेँ मिला कऽ राखऽ चाहै छथि आ बतहन बाबूसँ सेहो सौजनियाँ जोड़ि लै छथि। उकबा उठल छै जे संतराजक बेटा रतन राति कऽ बुच्चनसँ भेँट करऽ अबै छै। परगासक बाप सरयू मण्डलक दू साल पहिने मृत्यु भऽ गेलै, श्राद्ध सभक सभटा खर्चा लालेबाबू देने रथिन्ह। से परगासक खानदान नूनक सैरियत दइ छै। परगास मैट्रिक पास कएने छल, लाल बाबू फीस माफ करबा देने रहथिन्ह। ओ बैकवर्ड क्लासक अनुदान लेल पैरबी केने रहय मुदा लाल बाबू उल्टा-पुल्टा बुझा कऽ ओकरा अपना लग राखि लेलखिन्ह, तीन बीघा खेत देलखिन्ह मुदा तकर कोनो लिखा-पढ़ी नै भेल छै। आ अन्तमे किछु हास्य बतहन बाबूक समधिक स्वागतमे- चाह हुनका गिलासमे देल गेलन्हि, बेसी

दुआरे, मुदा हुनका भेलन्हि शरबत छिऐ, छटपटाय लगला जव्वह कएल मुर्गा जकाँ।छअम खण्ड समाप्त।

ओम्हर रतन अपन मित्र शंकर भगवानक भक्त अवधेशक ताकिमे अछि। अवधेश कपिलेश्वर स्थान चोरा कऽ भागि जाइ छल, आ मिडिल पास केलाक बाद भगवान शंकरसँ सभ दिन भेँट होय तँय कपिलेश्वर हाइ स्कूलमे नाओं लिखेने छल। रतन निमतल्ला घाटमे भूतनाथ मन्दिरमे शंकर भगवानक शरणमे जाइत अछि। आ अवधेश भेट जाइ छै, भूपेन बोश एवेन्यूमे ओ पत्नी सुनीता संगे रहैए। कंगाली वेशमे रतन! पैघ अफसर अवधेश कड्गालीकेँ पकड़ने सीढ़ीपर ठाढ़ अछि। सातम खण्ड समाप्त।

मोती कुकुड़ संगे खढ़िआक शिकार रतन आ अवधेश मिलि कऽ करय। रतनपर वारंट छै। ओकरा जमानत चाही। मुदा एकटा चिट्ठी अबै छै, अवधेशक भायक। डॉ. बिनायकक बियाह ओ सभ अपन बहीन प्रेमासँ करबाबय चाहै छला, लाल बाबूकेँ सेहो पसिन्न छन्हि। मुदा आब अवधेशकेँ सोचय पड़तै। बिनायक तँ बिनायके अछि, मुदा लालबाबू? रतन कहैए जे बियाह तँ लड़कासँ ने हेतै। मुदा परिवारो देखऽ पड़ै छै। चिट्ठीमे लिखल छै जे लालबाबू जल्दीसँ काज भऽ जाय से चाहै छथि। से शंका उत्पन्न करैए। पहिने तँ ओ रुप्पैयाक लोभमे कहियो खुलि कऽ गप्प नै केलनि। आठम खण्ड समाप्त।

कुमकुमक संग करुणा पाठक जीक आंगन जाइत अबैत रहैए, हेम-छेम बढ़ि गेल छै। लालबाबू करुणासँ बदली भऽ दोसर ठाम जेबा लेल कहै छथि, ओ दर्खास्तपर हस्ताक्षर कऽ दइए। लालबाबू जाइ छथि। करुणा कनैए, ओकरा देखि कुमकुम सेहो कानैए। पाठक जी अबै छथि। कुमकुमसँ कनबाक कारण पुछै छथि आ ओ भेद खोलैए, लालबाबू करुणापर तमसायल छलखिन्ह, कोनो कागचपर हस्ताक्षर लेलखिन्ह। खण्ड नौ समाप्त।

करुणा आ बिनायकक गपशप। करुणाक नजरि लालबाबूक फोटो दिस जाइए। बिनायक दृढ़ अछि। दसम खण्ड समाप्त।

पाठकजी आ बतहन बाबूक गपशप। पाठकजीकेँ कोनो गप बुझल छन्हि। लालबाबू करुणाकेँ नोकरी दिएबासँ पहिने मलहासँ कोनो शर्त मंजूरीक गप करै छला। पुछलापर नठि गेला, डिगरसारि पोखरिमे जीरा देमय चाहैए से कहि देलनि। मुदा कोनो पोखरि जीरा लेल नै देने छलखिन मलहाकेँ लालबाबू। तखन कोन एहेन गप छै जे मलहा आ लालबाबूए टा केँ बूझल छन्हि। करुणाक पढ़ाइ मुजफ्फरपुरमे 'कैथोलिक चर्च स्कूल' आ 'चैपमेन गर्ल्स स्कूल'सँ भेलै। पाठकजीकेँ कुमकुम पुछने छलन्हि जे करुणा दीदी ककर बेटी छथिन, दीदी बाबूकेँ ओ कहै छलखिन जे ओ तोहल बेटी छियौ आ रुपैय्या सेहो देलखिन। करुणा कथीपर हस्ताक्षर केलक?

कुमकुमसँ पाठक जी बिनायककेँ कहबा देथिन्ह। बिनायक करुणासँ पूछत आ ओ मना नै कऽ सकत। आ फेर बिनायक आ करुणाक गपशप, बिनायक समाठक चोट करुणापर नै बजरऽ देता। एगारहम खण्ड समाप्त।

अवधेशक पैरवीपर रतन कलकत्तामे सेक्युरिटी एडवाइजर अछि। मामिलाक तारीखपर मुजफ्फरपुर जाइए मुदा गाम नै जाइए। अवधेश संगे शेफालीसँ भेँट होइ छै। गपक क्रममे शेफाली कहै छथि जे अवधेश कतेक मैथिल सभकेँ नोकरी दियेलथिन मुदा वएह सभ हिनकर निन्दा करैत रहै छन्हि। शेफाली कहै छथिन जे शेफालीक मामा वकील छथिन्ह, ओ कहै छथिन्ह जे रतनक जीत हेतै मुदा असली हत्याराक पता सेहो लगबऽ पड़त। रतनकेँ विश्वास छै जे असली हत्यारा लालबाबूक जिरतिया परगा छै। अवधेश एकटा आर चिट्ठीक गप रतनकेँ कहै छै, बिनायककेँ करुणा संग लभ भऽ गेल छै, ओ ओकरासँ बियाह करऽ चाहैए। शेफालीक पिता रतनक सेक्युरिटी ऑफिसर, शेफालीक मामा कमल सरकार छथि वकील। शे**फा**लीक पिता राय जी मैथिल आ माता बंगाली। शेफाली मैथिलीमे कइएकटा पोथी सेहो लिखने छथि। शेफाली आ रतनक घटकैती! खण्ड बारह समाप्त।

लालबाबू करुणाक बदलीक चिट्ठी पठबा दइ छथि, मुदा बिनायक करुणाकेँ छुट्टीपर पठबा दइ छथिन्ह आ पोस्टमैन नॉट अवलेबल

लिखि कऽ चिट्ठी घुरा दइए। पोस्टमेन नवयुवक अछि आ बिनायक ओकरा नोकरी लगेबामे बहुत प्रयास केने रहथि। लालबाबू परगासक माध्यमसँ करुणाकेँ निपत्ता करबा देता मुदा हुनकर पत्नीकेँ सुनल दूटा शब्द 'देखिहें बचाकऽ' उद्वेलित कऽ दइ छन्हि। गर्मी तातिलमे मलय आ अजीत गामेपर अछि। परगास चारि गोटेसँ गेल मुदा करुणा दाँत काटि कऽ अपनाकेँ छोड़ा लेलक। आ ओकर चिचिऐब सुनि मलय, अजीत आ ड्रेसर सीरीचरण आबि गेलै। करुणा ओइ चारूमे सँ परगासकेँ चीन्हि गेलै। खण्ड तेरह समाप्त।

करुणाक बदलीक चिट्ठी एकबेर ने घुरलै, आब फेर लालबाबू कोनो ब्योँत लगा रहल छथि, देखै छथि ओइ छुतहरियाकेँ आब के रखतै। रतन बरी भऽ जेत्तै, से वकील कहलकन्हि। करुणा आ परगासक बियाह करा देता आ मामिले खतम। घर घुरै छथि। पत्नी बिनायकक बियाहमे देरी हुनका द्वारा मांगल जायबला पूरेसूर तीस हजार रुपैय्या आ ऊपरसँ मोटरकेँ मानै छथि। खण्ड चौदह समाप्त।

मिस्टर राय सभक बदौलत रतनकेँ नोकरीयो भेटलै आ जमानतो। लालबाबूक पत्नीकेँ भनक लागि गेलन्हि जे करुणा रतनक बहीन छिऐ मुनियाँ, ओकरा पहुँचीपर चिन्ह छै जइपर ओ घड़ी बान्हैत अछि, परगासक मायसँ किछु बजा गेल रहै। लालबाबू पछताइ छथि जे किए पाइ लेल अड़ि गेला, भने अवधेशक बहीनक संग बिनायकक बियाह करा दैतथि। बाताबाती होइए, पत्नी बिनायक

आ करुणाक बियाह भऽ कऽ रहत से कहै छथि, लालबाबू धकेल दइ छथिन्ह, बिनायक बीचमे आबि जाइए, लाल बाबू तीतल बिलाड़ि सन पाछू हटि जाइ छथि। खण्ड पन्द्रह समाप्त।

बिनायक संगे माय स्टाफ क्वार्टर चलि गेली। बतहन बाबू, पाठक जी आ मनसूर नदाफ लालबाबूकेँ मनबै लेल गेला। परगास बुच्चनक कहियो चेले छल, मुदा आब कहाँ जाइए। करुणाक बदलीक चिट्ठी फेर अबै छै, स्पेशल मेसेंजर द्वारा। करुणा चिट्ठी रिसीव कऽ लेलक। बिनायक तमसा जाइए, ओकरा नीच, बदमाश कहैए, कहैए जे जाति धर्म कतऽ जेतै! कहैए जे स्त्री नीच होइते अछि। कहैए नीच! कुलटा! मुदा 'प्राणेश' शब्द सुनिते बिनायक पिघलि जाइए। करुणा एकटा मोड़ल कागच बिनायकक हाथमे दैत अछि। बिनायक ओ पढ़ि लज्जित भऽ जाइए, क्षमा मांगैए। करुणा रिजाइन कऽ देलक ई गप सौंसे पसरि जाइए। लालबाबू खेनाइ-पिनाइ शुरू कऽ देलन्हि, जँ बिनायक घर आओत तँ ओ घर छोड़ि देता, एते धरि लालबाबू आंट कऽ देलनि। परगासकेँ लालबाबू अन्तिम नाटक खेलेबा लेल कहै छथिन्ह। खण्ड सोलह समाप्त।

अन्तिम खण्ड अछि खण्ड सत्रह। दुर्गा भसानक दिन। दुर्गापूजामे तीनटा नाटक मंचस्थ कएल जाइए, दूटा मैथिली आ एकटा हिन्दी। आइ मैथिली नाटक छै- 'कुहेस', बिनायक रामकुमारक पार्ट

अस्वीकार केलक, ओ डाक्टरक पार्ट खेलत। अजित रामकुमारक आ मलय उच्च शिक्षित युवक शंकरक पार्ट खेलत। बुच्चन वरक बाप सुवंश बनैत अछि। पार्ट खेलेलासँ लोक ओहने नै भऽ जाइए, बुच्चन सभकेँ रबाड़ि दैत अछि। मामिलाक तारीखक बाद रतन सेहो अवधेश आ बुच्चनक आग्रहपर दुर्गापूजा देखै लेल गाम आयल अछि। गाममे गुलंञ्जर छै जे करुणा मलाहक बेटी नै छिऐ, रतन करुणासँ दू-तीन बेर गप केलक, ओ अन्दाज करैए जे हो न हो करुणा ओकरे बहीन मुनियेँ ने हुअय। स्त्रीगणक गप ओकरा मोन पड़ै छै जे रतने सन एनमेन छै ई छौड़ी। रतन बुच्चन ओइठाम रहैए। चारि बजैबला छै, नाटक समाप्त होइबला छै, भसानक कारण देरी भेलै। करुणा अपन पितार्केँ सभ साल बजा लैत अछि, ओ अपनो मोने आबि जाइ छथि, अहू बेर आयल छथिन्ह। परगास रतनक पछोर धेने अछि। नवगछुलीक अन्तमे धूर छै, गाछक पाछाँ ओ धपायल अछि। मुदा छह धोखामे लालबाबूपर पड़ल, रतन पाछुए छल। फरीछ भऽ गेलै, लालबाबू अस्पताल एला। आ फेर रहस्योद्घाटन आ पश्चाताप। आ बिजयादशमीक नाटक समाप्त।

अध्याय ३
गामबाली (उपन्यास) (१९८२)

सभक आँखिक काँट गामबाली आइ ओ बबूर सेहो कटि गेल!
ओकरा चाहऽ बला, नै चाहऽ बला आ कात रहनिहार, तीनू तरहक लोक खुश अछि। ओकर अन्तिम संस्कार के करतै? जादव समाज आकि ब्राह्मण समाज। जादव समाज आ ब्राह्मण समाजक लोक पहुँचै छथि मालिक माने सोनमनि झा लग, ओ छथि पाउ-पाउ करैत, मसलनमे ओङठल।
गामबालीक संस्कार जादव समाज मिलि कऽ करतै।
गोअर टोलीक लोक ओकरा गामबाली कहब शुरू केलकै आ फेर बभनटोली, कैथटोली, जोलहा टोलीक लोक सेहो ओकरा गामबाली कहऽ लगलै।
गामबालीक वर बूढ़, ओ तेसर बहु छली, पहिलसँ बच्चा नै भेलै तँ दोसर बियाह आ फेर दोसरोमे बच्चा आ पहिलोमे। आ फेर तेसर बियाह सौख लेल। बाबू पैरुखक गप छै, के कत्ते बहु डेबि सकैए। ज्ञानचन यादव माने ज्ञनचनमाकेँ लोक मरखाह बना देलकै, अपने बलजोरी ओकरा घरो कऽ दऽ जाइ गेलै आ तहन लाहेब मचा दइ गेलै गाममे।

गामबाली जीवित रहलि, ओकर जिजीविषा आर प्रबल भऽ गेलै बादमे। बड़े शानसँ आवाजाही करैत रहलि, कोनो अरचन नै एलै।

आमिल पिनहार समाङ लेल धनसन, कुलटा बुझिनिहार लेल कत्तौ किछु नै। जे ओकरा संगे भौजीक सम्बन्धे हँसी ठट्ठा करै तकर ओ जवाब दै हँसि कऽ। गुअरटोलीसँ ओकरा गामबाली कहबाक प्रचार भेलै आ सौंसे गाम पसरि गेलै।

मुदा गामबालीक कोनो सम्बन्ध अपन ऐ गामक अपन पुरान सासुरक परिवारसँ नै रहलै। मुदा खान-पान, लेब देब सौंसे बाभन-गच्छसँ छूटल रहलै।

आइ ओकर मृत्युक बाद ओकर प्रशंसक कम नै छै, शानसँ आयलि आ शानसँ चलि गेलि।

धनक ऐंठल बूढ़ संगे गामबालीक बियाह भेल रहै, पतिक तेसर पत्नी। सखा-पात लेल बूढ़ दोसर बियाह केलनि फेर दोसरो आ पहिलोसँ बच्चा भेलनि। तेसर पत्नी सख लेल, लौल लेल केलन्हि। छिनरबा मनसा सभ ओकरा दूरि करऽ चाहलकै आ ज्ञानचनमाकेँ मरखाह बना देलकै।

आ उपन्यासकार शुरू करै छथि ज्ञानचन यादवक खिस्सा।

ओ पैघकेँ बाबा, काका, भाइ आ छोटकेँ बौआ, बच्चा आ नूनू कहय। कोनो आंगन नै रहै जतऽ ओकर प्रवेश नै रहै। दाइ, काकी, बहिन, बचिया कहैत-कहैत ओकर मुँह टूटै। मुदा कनियाँ-पुतराक अंगनामे हठ दऽ जाइत साइते कियो देखने हेतै। बूढ़ि-पुरैनियाँक हठ केलोपर भावहुक अंगना ओ धखाइते जाइ छल। बाबी, माय आ पिउस श्रेणीक स्त्री कहितथिन- एहेन लजकोटर भऽ कऽ बैदगिरी केना करै छह।

गीतक प्रेमी रहय ज्ञानचन। विदेशिया नाच आ नौटंकी मे खूब मोन लागै, एकरा सोलकन्हक विधा मानल जाइ छलै मुदा कुलीन धीयापूता आ नवतूर आगुए जा कय बैसए। विदेशिया नाचक सभटा गीत याद रहै ओकरा। विद्यापति, निर्गुण नचारी ओ ओहुना टेरि दीअय, बाभन सभकेँ खूब पसिन्न पड़ै, बाभनक गाम रहै। मीरा आ कबीरक भजन ओहिना याद रहै ओकरा। मुदा जालिम सिंहक नाच आ गीत लेल मोन अहुरिया काटै, धुर छीया हेतै, साहस नै होइ।

बैदगिरीसँ ओकरा यश भेटलै मुदा बहुतो लोक कुरबुरा गेलै। आ ओकरा मोन भेलै हरमुनिया किनबाक, आजी माँ गाड़ि कऽ रखने रहथिन जिनगी भरिक कमाइ, चानीक रुपैय्या। हरमुनिया, घड़ी आ घोड़ा सोनपुर मेलासँ आबि गेलै। ई किछु लोकक आँखिमे गड़ऽ लगलै। मालिकक अपन भातिज गेना झा ज्ञानचनक परम मित्र रहै, घोड़ा दौगेबामे पारंगत भऽ गेलै। गाममे कए गोटेकेँ घड़ी रहै, दू तीन टा आर हरमुनिया रहै, मुदा मौका मुनासिब ज्ञानचनक घड़ी आ हरमुनिया काज आबै, कत्तौ कीर्तन बा अष्टजाम होइ, हरमुनिया हाजिर। ककरो बच्चा होनिहारी रहै, ओकर घड़ी सोइरीमे हाजिर। ओकर बौस्तु दसगर्दा रहै।

एम्हर गामबालीक दर्द बढ़ऽ लगलै। ज्ञानचन ओतऽ घोड़ा चढ़ि कऽ नै जाय, कथीले रगड़ा लेत, रामाधार अगिलेसुआ रहै। मुदा गेना झा घोड़ापर सभतरि घूमै। मुदा गामबाली ओकर घड़ीक बड़ाइ केने रहथिन, घोड़ा देखेबाक अनुरोध गामबाली केलखिन। से ओ

घोड़ा लऽ कऽ आयल रहै देखेबा लेल। मुदा ओतऽ तऽ दोसरे ओलबा-दोलबा उठल रहै। गामबालीकेँ भूत लागल रहै की? ओकर शरीर देखबा लेल लोक जुमल रहै। लोक पैन ढारि रहल रहै। फेर गामबाली होशमे एलै। ज्ञानचनकेँ गामबाली कहै जे पेटमे दर्द होइ छै, ई भूत-तूत नै छिऐ। ज्ञानचन नबका दवाइ देलकै, पुरना फेकि देबाले कहलकै।

आ फेर शुरू होइए किरन दाइक द्वारिकाक गुरु महराजक खिस्सा। किरन दाइकेँ होइ छन्हि जे गुरू महराजकेँ कतऽ राखी कतऽ नै। हरमोनिया लैले किछु गोटे आयल छलै, गुरु महराज लेल ठेकैताक जोगार ज्ञानचनकेँ करऽ पड़तै।

कंटीर बाबूक भतीजी किरन दाइ, बाल विधवा। दुरागमनक पहिनहिये चूड़ी छिना गेलनि, तापसी भऽ गेली, अठवारे कपिलेस्सर जाथि। कुल-खूटक उद्धार भऽ जेतनि, लोक कहथि। संत समागम करबाबथि। बृन्दाबन आ द्वारिकाक संत बड़े प्रशंसा करनि।

द्वारिकाक महराजजी, अद्भुत, डोका सन-सन आँखि, मुदा बाबाकेँ पसिन्न नै, जहि-तहिं कहि देलखिन, मुदा महराजजी भजन गाबि चलि जेता, रुकऽ नै आयल छथि। किरनदाइक कण्ठ एतेक नीक तँ महराज जीक केहेन हेतन्हि। लोक आह्लादित भऽ गेल, बाबा माफी मंगलन्हि, किरन दाइ तिरपित भेली। आगाँ महराजजीक विवरण। ओ द्वारिकाक नै बृन्दावनक छथि, बाल-ब्रह्मचारी, बृन्दावन जे ओगरलनि से छोड़लनि नै। तैं एहेन लाल बुन्न देह छै,

पथ भ्रष्टक एहेन देह भइये नै सकै छै। ओतऽ कनियाँ ज्ञानचन दिस एकटक देखि रहलि छलि आ मालिक कनियाँकेँ, ज्ञानचनकेँ भेलै जे ओ पकड़ा गेल। तीन-चारिटा बाल-विधवा आरो छली। महराजजी बिन्दुजीक भजन गौलनि, फेर सूर आ फेर मीराक।

ज्ञानचन सोचमे डूमि गेल कनियाँ (गामबाली) सेहो एक दिन किरन दाइ बनती? सभ बाल विधवामे तेज होइ छै, किरन दाइ सन हुनको मे छन्हि।

किरन दाइ नै तँ सकली बनती, ओझा झाड़ैत रहतन्हि। भूत सभ दिन सबार रहतनि।

आ नै तँ परमेस्सरी बनतीह, हुनकर देहक गांठ-बान्ह ककरो पागल बना सकैए। मात्र एक-दू बेरक माजरा रहतनि, फेर कपिलेस्सर, विदेस्सर घुमैत रहती।

आ नै तँ रतनी बनि जेती, बापक घरमे बेटी निर्भीक रहै छै, सुरक्षा केनिहार चारू कात। मुदा पुरुष तँ आगि पजारि दै छै, ओकर दोख धएल नै जाइ छै। से रतनी उढ़रि गेलि। रतनी भठि गेलि, समाजकेँ मुँह देखेबाक साहस नै भेलै।

नै कनियाँ किछु नै बनती, ओ अपराजिता छथि, ओ डुब्बी मारि पानि नै पीतीह। ओ उठि गेल, ओ सोलकन्ह अछि, मालिककेँ कियो नै पकड़तै, बिहारिमे पर्वत ठाढ़े रहै छै, खढ़ उड़िया जाइ छै। हरमुनियाँ लऽ कऽ बिदा भेल। ओइ राति कनियाँकेँ निन्न नै भेलनि। कनियाँक बाप पण्डित रहथिन, लिखऽ पढ़ऽ सिखा देने रहथिन। भाइक इतिहास, भूगोलक किताब पढ़य लागथि कहियो

काल।

जमीन्दारी उखरलाक पनरहो बरख बीति गेल रहै, मुदा गाममे सरओ खेलेबाक रेवाज रहबे करै। गामक खलीफा रहथि दफेदार जादब। ज्ञानचन खलीफाक भातिज, मालिक (सोनमनि झा) क समाङ सभ खलीफाक चेला। ज्ञानचन अपन संगतुरयामे दू-तीनटा कैं छोड़ि सभसँ पेंचैल आ फुर्तीगर। ज्ञानचनसँ चौपाल जमै। ओ मधुबनी-दरभंगा दवाइ कीनै ले जाय, अखबार पढ़य। भारत-चीनमे युद्ध भेल रहै। सभकैं सुनाबय।

कोलाकोली धान कटाय लागल रहै, अंगनामे धानक झट्टा पसारल रहै।

मालिकक एकटा भातिज रामाधारकैं ज्ञानचनक घोड़ा, घड़ी आ हरमुनियाँ सभसँ बेशी अधला लागै। सोलकन्ह घड़ी बान्हत कि घास छीलत? बात बढ़लै, ज्ञानचन पटकि कऽ पाँच-छअ घुस्सा जमा देलकै। गेना झा ज्ञानचनकैं सम्हारलक, खलीफा रामाधारकैं सम्हारलक। खलीफा ज्ञानचनकैं अपन दूरा पर नै आबैले कहलकै- तोँ डोम, हम चमार।

रामाधारक बमकार, खलीफा पिपरक पात भेल छल, मालिकक पैरुख बुझल रहै। खलीफा कपली गाय भऽ रामाधारकैं लऽ कऽ पहुँचल। बात पसाही जकाँ पसरि गेलै। सोनमनि झा भातिजकैं डाँटि देलनि मुदा बात बिसरऽ बला नै छलै। ब्राह्मणपर हाथ छोड़लक, गाम-गमाइत भार-चङेरा जाइ आकि भार-दौर आबै, भरिया अबस्से ऐ गपक खोदबीन करै।

सोनमनि सोचलनि- ज्ञानचन सभक हृदयमे अछि, हुनको हृदयमे। मुदा जखन ओ ज्ञानचनकेँ तौलऽ लगला तँ ओ नोंसिक एक कणोक सुरकान नै छल। आ से कण आँखिकेँ कुटकुटा देने रहनि। आ निर्णय भेल साँपक फेंचकेँ थकुचबाक। राड़ आ राँड़ दबले नीक। ज्ञानचनक बापसँ सुवंश झाक पटरी बैसनि, हुनकर एकटा नठालु पशु ज्ञानचनक बाप अपना खुट्टापर लऽ गेल छला, जाइते ओ गाभ रखलकै, पाड़ी तरे बच्चो भेलै। तहियेसँ ज्ञानचनक अबरजात बढ़ि-गेल रहै, आब कनियाँक दवाइ-बीरोसँ आर बढ़ि गेलै। पानि-पाथर किछु खसौ मुदा ज्ञानचन एक बेर गाम भरि टहलि अबिते छल।

ज्ञानचनकेँ आब सभ दिन आयब पार नै लगतै, सभक व्यवहार बदलल छै, तकरारि करबाक रस्ता ताकल जा रहल छै। धाब कतौ, पौ कतौ। ओ बहुत रास पुड़िया बना रहल छल, कनियाँक अंगनामे, बेसी पुड़िया किए बना रहल अछि ज्ञानचन? की हमरोसँ झगड़ा कऽ लेलौं, एकटा अहीं तँ खोज-पुछाड़ी करै छी-कनियाँ पुछै छथिन्ह। आत्मीय गप्प। यैह तँ बिसा रहल अइ हमरापर- ज्ञानचन बाजल।

जकरा नै देखलनि राम, तकरा के देखत आन- कनियाँ बजली। कनियाँ ओकर बियाहक विषयमे जिज्ञासा करै छथि, ओ उत्तर दैए- बियाह भेलो छन्हि आ नहियो- बियाह ठेङासँ नापि कऽ भेल छन्हि- सोलकन्हमे अहिना होइ छै। हमरा सभमे सगाइ चलै छै, भरिसक कत्तौ कऽ लेलकै- ज्ञानचन बजैए।

ज्ञानचन बैद अछि, ज्ञानचन अपन गप सभकेँ कहि दैए, कारण बैद आ रोगीक सम्बन्ध बाप-बेटा सन होइ छै- ज्ञानचन बजैए।
आर कोनो सम्बन्ध नै?- कनियाँ पूछै छथिन।
जमीन्दारी समयमे जकरा डरे खढ़ जरै, से केना मृदुभाषी भऽ गेल? ओलि लेबाक भावना..
एक राति ज्ञानचनक एक बीघा धान कटि गेलै। गंगाजली धान बड़े सुतरल रहै।
रामपुर गाममे चोरि नै होइ।
मुदा ई..
लोककेँ आश्चर्य भेलै, कुकुरो नै भुकलै।
मुदा ज्ञानचन सुबहापर किछु नै करत।
ओरिका जूमि गेल रहै मुदा ज्ञानचनक गपसँ औंटबाक मौका नै भेटै गेलै। बातक लारचार भेलै मुदा ज्ञानचन लारनिकेँ शुरुएमे तोड़ि देलकै।
कुकुर अनचिन्हारकेँ कटै छै, बनियाँ चिन्हारकेँ आ छिनार आ चोर सभकेँ।
ज्ञानचन तीन-चारि गोटेक सङोर कऽ खेतमे धपाय लागल।
मुदा एक राति अलसा गेल। निशा भाग रातिमे कारी लोटा मांगैले एलै, करिया नामी सेन्हकट, उचितबासँ कम नै। ओ ओकरा कहलकै जे आइयो नरही परहक ओकर खेत कटा गेलै। करिया सभ दिनेसँ मालिकक लोक। ओकरापर बिसबास नै; ओकरा एक गोटेक तकतियानीमे राखि अपने गुप्ती आ लाठी लेलक ज्ञानचन,

आन सभ भाला आ गड़ांस लऽ बिदा भेल। धान सत्ते छोपल जा रहल छलै, ई तीन-चारि गोटे आ ओम्हर पन्द्रह-बीस गोटे। ज्ञानचनक प्रत्युत्पन्नमति कमालक रहै, अखन वार करब ठीक नै, हथियार ओकरो सभ लग हेतै। जखन बोझ उठा कऽ ओ सभ बिदा हएत तखन वार करत, ओ रामाधारकेँ पकड़त, आन सभ अनका। भाड़ा परहक चोर चोर नै होइए, ओ सभ सामना नै कऽ सकतै।

रामाधार पकड़ा गेलै। पराउ झा ओकरा छोड़बेलकै, पुलिस आ कानूनक ओझरीक चर्च सेहो छै।

मुदा बादमे ज्ञानचनकेँ चारि-पाँच घुस्सा लगलै मुदा गेना झा आ पराउ झा संग देलकै।

खलीफाक बेटा बैजू ब्राह्मण सभक संग बैसार करऽ लागल रहै। एकटा बाँसक बीट लेल खलीफा आ ज्ञानचनमे बाताबाती भऽ जाइ, खलीफा हारि कऽ छोड़ि दै मुदा बैजू नै मानैबला।

सोनमनि झा (**मालिक**) आ सतंजीब झा बेमात्रे बड़बढ़ियाँ मुदा भीतरे-भीतर सुनगैत।

मालिक कनियाँक पहुँची पकड़ि हाथमे रुपैय्याक बंडिल धऽ देलथिन, कनियाँ बंडिल चूल्हिमे धऽ देलथिन।

ज्ञानचन घोड़ा बेचि लेलक।

फेर कनियाँक नैहरक कथा, समाजक कथा कहै छथि उपन्यासकार।

साधु महात्मा भीलनीकेँ पम्पासरक पा**नि नै** छुअ देलनि जे छु**ता**

जेतै। पम्पासरमे पिलुआ फड़ि गेलै। पुरुषोत्तम राम भीलनीकेँ ओइमे नहबेलनि, ओकरामे गङ्गा ढुकल रहै, पम्पासरक पानि अमृत भऽ गेलै।

कनियाँ आंगनसँ बहरा गेली, ज्ञानचन लग पहुँचि गेली। ओ ज्ञानचनक छातीमे अपन कनपटी सटा लेलनि। ज्ञानचनक आजी सभटा देखैत रहै। कनियाँ घुरि गेली। पौ फटैत बात कानोकान गुलगुला गेलै। मालिक कनियाँकेँ ठोंठिया कऽ ओकरा ज्ञानचनक दरबज्जामे ठेल देलनि। आ कनियाँ गामबाली भऽ गेली, ओही दिन। ज्ञानचन भरि पाँजि पकड़ि लेलकनि, कनियाँक सभ पीड़ा मेटा गेलनि तखने। ज्ञानचन गौआँक बुत्तापर गाममे मिडिल स्कूल खोललक। रस्ताकेँ ऐलफैल करबओलक। आसपासक गाममे रामपुरक चर्चा होमऽ लगलै। जमीन्दारी प्रथा समाप्त भेलै आ पाँखि बला लोक सभ परती-परांत आ राजक आमक गाछी कौड़ीक भावमे लिखबऽ लगलै।

ओइ दिन घड़ी पूजा रहै। बीट लग बझि गेलै। गामबाली ओइ दिन दोसर बेर विधवा भऽ गेली। मालिक आ खलीफाकेँ बारह बर्ख जहलमे रहऽ पड़लनि।

गामबालीक खिस्सा एतेक विस्तारमे ककरो नै बुझल रहै, ओकरा मरलाक बाद सभ ओकरा बारेमे सुनैए।

सोनदाइक बाप हुनका नौबरखक उमेरमे दछिनाहाक हाथे बेचि देलनि, ओ पतिकेँ छोड़ि दोसर बियाह कऽ लेलनि। पहिल पति आयल रहै मुदा गामक कओलेजिया आ परदेशिया सभ ठोंठिया

कऽ ओकरा भगा देलकै। सतंजीब झा केर बेटा अपन गर्लफ्रेण्डसँ बियाह कऽ लेलकै, रामधारक बेटा...।

गामबालीक दाहसंस्कारक भार दू-तीन टा जादब लेने छै। गामबालीक बेटा छै पनरह बर्खक। कठियारीमे सात गोटे चाही, बात पसरि जाइ छै, रामाधारक बेटा, ओकरा पीठेपर बैजूक बेटा आ फेर तँ धर्रोहि लागि जाइ छै। झगरौआ बीटसँ बाँस कटि कऽ अबै छै। ज्ञानचनक सऽराबला गाछी आब अनकर भऽ गेल छै, ओत्तै दाहक्रिया सम्पन्न होइ छै। पुस्तकालयक नाम राखल जाइ छै- गामबाली स्मारक पुस्तकालय।

अध्याय ४

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

पूर्व पीठिका: संगीता मेनन लिखै छथि: अद्वैत वेदान्तक दूटा प्रमुख उप-पाठशाला **शंकर**क बाद उत्पन्न भेल: **भामती** आ विवर**ण**। भामती विद्यालयक नाम वाचस्पति मिश्रक (नवम शताब्दी) **शंकर**क ब्रह्मसूत्र भाष्यपर टीकाक कारण अछि, जखनकि विवर**ण** विद्यालयक नाम पद्म**पा**दक प**ञ्चपा**दिकापर प्रकाशात्मन (दसम शताब्दी) केर टीकाक नामपर राखल गेल अछि, जे स्वयं ब्रह्मसूत्रपर **शंकर**क टीकापर टीका अछि।

माया संसारक निर्माणक लेल उत्तरदायी **अछि**। अविद्या **आत्म** आ अ**नात्म**क बीच विशिष्ट अस्तित्वकेँ भ्रमित करबाक लेल उत्तरदायी अछि। ब्रह्मसँ एहि भ्रमकेँ अविद्या **नुका** कऽ संसारक निर्माण करैत अछि। एकर परिणामस्वरूप जीव सीमित दुनियाक कर्ता (कर्ता) आ भोगी (भोक्ता) क रूपमे काज करैत छथि। शास्त्रीय**ताक** विपरीत**ता** अद्वैत वेदान्तक दूटा उप-पाठशालासँ कयल जा सकैत अछि जे **शंकर**क बाद उत्पन्न भेल छल: भामती आ विवर**ण**। एहि दूनू उप-विद्यालयक बीच प्राथमिक अन्तर अविद्या आ मायाक **प्रकृति आ केन्द्र-बिन्दु**क अलग-अलग व्याख्यापर आधारित अछि। **शंकर** अविद्याकेँ आदिहीन बतौलनि। ओ मानैत छलाह जे अविद्याक उत्पत्तिक खोज स्वयं अविद्यापर आधारित प्रक्रिया अछि आ तेँ ई निष्फल होयत। मुदा **शंकर**क शिष्य लोकनि एहि अवधारणापर बेसी ध्यान देलनि, आ एहि तरहेँ दुनू उप-विद्यालयक

उत्पत्ति कयलनि। भामती आ विवरण विद्यालयकेँ अलग करयवला प्रमुख मुद्दा अविद्याक प्रकृति आ स्थानपर ओकर स्थिति अछि। भामती विद्यालयक अनुसार, जीव अविद्याक स्थान आ वस्तु अछि। विवरण विद्यालयक अनुसार, ब्रह्म अविद्याक स्थान अछि। भामती विद्यालयक मानब अछि जे ब्राह्मण कहियो अविद्याक केन्द्र नहि भऽ सकैत अछि **उनटा** ईश्वरक रूपमे **ओ** एकर नियंत्रक अछि। **जीव** केर व्यक्तिगत अज्ञान दूटा कार्य करैत अछि- ब्रह्म**केँ झाँपि दैत अछि**, आ विक्षेप**सँ** एकटा अलग दुनिया बनबैत अछि। मूल–अविद्या ("मूल अज्ञान") सार्वभौमिक अज्ञान अछि जे मायाक समकक्ष अछि, आ एकरा ईश्वर द्वारा नियंत्रित कयल जाइत अछि। विवरण विद्यालयक मानब अछि जे चूँकि ब्रह्म मात्र विद्यमान अछि, तेँ ब्रह्म अविद्याक स्थान आ वस्तु अछि। ज्ञानमीमांसात्मक चर्चाक सहायतासँ ब्रह्म आ संसारक बीच द्वैतक अवास्तविकता स्थापित भऽ जाइत अछि। विवरण विद्यालय ब्रह्मक अस्तित्वकेँ "शुद्ध चेतना" आ "सार्वभौमिक अज्ञान" दुनूक रूपमे सन्दर्भित प्रश्नक उत्तर दैत ई दावा करैत अछि जे वैध अनुभूति (**प्रमा**) रोजमर्राक संसारमे अविद्या मानैतअछि, जखन कि शुद्ध चेतना ब्रह्मक अनिवार्य प्रकृति अछि।

[संगीता मेनन, राष्ट्रीय उन्नत अध्ययन संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर, भारत **https://iep.utm.edu/advaita-vedanta/]**

वाचस्पति मिश्र ब्राह्मणक संसारसँ सम्बन्धक चर्चा करैत छथि आ श्रीहर्षसँ भिन्न छथि, ओ नैय्यायिक लोकनिसँ सेहो श्रीहर्षक अपेक्षा शान्तिसँ सह-अस्तित्व बनेने छथि, ओ न्यायकेँ इहलौकिक आ अद्वैतकेँ पारलौकिक सत्ताक विवरण लेल सक्षम बुझै छथि। वाचस्पति न्यायसूत्रपर टीका सेहो केने छथि। से धर्मकीर्ति सन ओ अद्वैत आ न्याय आ शंकर सन सांख्य आ अद्वैत , माने दू-दू दर्शनमे समादृत छथि। मुदा श्रीहर्षक खण्डनखण्डखाद्य**म् सँ** ई शान्ति टूटि गेल। शंकर मिश्र (भेद-रत्नमे) तँ अभद्रतापर उतरि गेला:- भेद-रत्नक परित्राण लेल तार्किक (नैय्यायिक) लोकनि मात्र, सचेष्ट छथि, तेँ ई शंकर (आदि शंकराचार्यसँ भिन्न ई शंकर मिश्र- आदि शंकराचार्यपर अपमानजनक लक्ष्य) वेदान्ती (अद्वैत) चोर सभक काट कऽ रहल छी।

भामती नाटक

से सिद्ध भेल जे वृद्ध वाचस्पति समावेशी रहथि, तेँ भामती नाटकमे जे हुनकर कखनो काल आक्रामक आ विक्षिप्त रूप देखाओल गेल अछि से हुनकर दर्शनसँ मेल नै खाइत अछि।

नाटक भामतीपर केन्द्रित अछि, स्त्री-विमर्श अछि **(**खास कऽ शाम्भवीमे; भामतीमे सेहो मुदा भामतीक आत्महत्याक प्रयासक कारण स्त्री विमर्शमे अधला श्रेणीमे आओत**)**, सामाजिक विकृति सेहो देखाओल गेल अछि। संवाद नाटकक मंचन लेल उपयुक्त अछि। ११ टा पात्र जइमे भामतीक अतिरिक्त मात्र एकटा महिला पात्र छथि। महिला कलाकार बा पुरुख लोकनि द्वारा महिला बनि

नाटक खेलेनिहारक न्यून संख्याकेँ देखैत ई ठीके अछि। वाचस्पतिक माय-बाबूक मृत्युपरान्त पहिल अंक प्रारम्भ होइत अछि, वस्त्र-सज्जा आ मंच-सज्जाक विवरणक संग दृश्य विवरण अछि। भामती-पति वाचस्पति अपन गुरुदेव शंकराचार्यक जन्मस्थानक दर्शन लेल गेल छथि आ हुनकर कर्मस्थल सभक दर्शन सेहो करताह, से समाचार सुनि भामतीक उद्वेलित मोनमे खुशी भरि जाइ छन्हि। एकटा विलेन (खलनायक) पुरन्दर सेहो अबै छथि, ओ किछु कमाइ करऽ चाहै छथि, पाठशाला आदि खोलऽ चाहै छथि। आगाँ जा कऽ ओ आर घृष्टता करै छथि, आ ..

पहिल अंकमे भामती २५-२६ बर्खक छथि।

दोसर अंकक प्रारम्भ सेहो वस्त्र-सज्जा, मंच-सज्जा आ दृश्य विवरणक संग होइत अछि। दोसर अंक १५-१६ बर्खक बादक अछि। माने आब भामती ४०-४२ बर्खक छथि। वाचस्पति ऐ अंकमे छथि, पहिल बेर भामतीकेँ देखै छथि, तेना ने ग्रन्थ निर्माणमे लीन रहथि।

तेसर अंकमे भामती एकटा पत्र दऽ हेरा जाइ छथि, पत्रमे ओ अपनाकेँ हुनकर ध्यान भंग करबाक दोषी मानैत, जइ कारणसँ शंकरक ब्रह्मसूत्र भाष्यपर टीकामे देरी भऽ रहल छै, प्रायः पोखरिमे कूदि जाइ छथि, ओना तकर विवरण नै छै नाटकमे। अगिला दृश्यमे पूर्णतः स्नाता भामतीकेँ कोरामे उठौने वाचस्पतिक प्रवेशसँ ई भान होइत अछि। आ तेँ पोथीक नाम भामती ओ

राखलनि। आ नाटक खतम भऽ जाइत अछि।

लोककथामे दीपमे तेल खतम भेलापर अपन साड़ीकेँ टेमी बना देबाक आ पोथी खतम भेलापर वाचस्पतिकेँ हुनका नग्न देखि, ओइ त्याग लेल पोथीक नाम भामती रखबाक विवरण अबैत अछि, मुदा प्रायः मंचपर मंचनक दृष्टिसँ ई परिवर्तन नाटककार केने छथि। ओना भास्कराचार्य सेहो अपन गणितक पोथीक नाम अपन पुत्रीक नामपर लीलावती रखने छथि, मुदा ओइ पोथीमे प्रायः प्रश्न सभ सेहो लीलावतीसँ पूछल गेल अछि। [हे लीलावती, बुद्धिमान बालिका, जँ अहाँ जोड़ आ घटाव बुझैत छी तँ हमरा २, ५, ३२, १९३, १८, १० आ १०० केर राशिक योग बताउ, संगहि १०००० सँ घटेलाक बाद की बचल अछि सेहो बताउ।]

अध्याय ५

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

अस्मिता अछि लघुकथा संग्रह। मैथिलीक मुख्यधारा**क** कथापर समीक्षा करैत काल सुशील हमरा अनायासे मोन पड़ि जाइ छथि, आ से मुख्यधाराक कथाकारक शिल्पक दुर्बलताकेँ देखैत। मैथिली समीक्षाक दुर्बलताक कारण सुशीलकेँ धकियेबाक प्रयास तँ भेले छन्हि, मुख्यधाराक कथाकार जे लघुकथाक अर्थो नै बुझै छथि से पाठक विहीन साहित्यमे उधियाइत रहला आ सुशीलकेँ बिसरा देल गेल।

बघोतिया

बघोतिया सिद्ध करैत अछि जे केना फेक न्यूज पसारल जाइ छै आ बिहारि आनल जाइ छै, आबै नै छै। आ फेर अहाँकेँ **पतो नै** चलैत अछि जे बिहारि किए एलै आ फेर कतऽ गेलै। गुड्डी उड़े अकास, मुदा गुड्डीकेँ उड़ेनहार कियो आर छै। बघोतिया बच्चाकेँ उठा लै छलै, जमीनक झमेला, कब्जा, दू टाकामे भोट, भोट-मशीन। आ बघोतिया की रहै, के रहै? किछु नै, क्यो नै। तितैत-भिजैत लघुकथाक शिल्प देखू, केना ओ बढ़ैत अछि केना कथाकार ओइ गुड्डी उड़ेनिहार सभक लटाइपर कब्जा करै छथि, देखार करै छथि। बाबा तँ बाबे छथि। बघोतियाक खिस्सा सुनबैत-सुनबैत सभ आधुनिक समस्या उघार कऽ देलथि। बघोतिया सुशीलक सर्वश्रेष्ठ कथा अछि।

हमर नवीनतम फोटोमे सेहो सम्पादक महोदयक आग्रहपर लेखक

फोटो खिचबेता, फोटो संग परिचय चाही। मुदा ओइ बहन्ने कथाकार सामाजिक आ आर्थिक परिस्थिक विवरण कऽ दै छथि। **प्रेम-प्रसंग**मे सेहो पति-पत्नीक कथोपकथन प्रेम सम्बन्धी सभ छोट-पैघ गपक चर्च करैत अछि। सहयात्री आ मोह जे अपन होइत छैक, मे सेहो भिन्न-भिन्न क्षेत्रक लोकक माध्यमसँ छोट-छोट समस्याक, भावनाक विवरण देल गेल अछि, जे हम सभ आइ नै तँ बीस बर्ख पहिने भोगने छी।

प्रेम ने बाड़ी उपजय

“मुस्कीसँ भड़ल मुँहमे कालगेट टूथपाउडरक मॉडल सन उज्जर झकझक दाड़िमक बीआक पाँतीक संग हमरापर ठहरल ओकर निर्निमेष द्वय चक्षु पल्लव।”

आब मूलधाराक बाल साहित्य **लेल** साहित्य अकादेमी पुरस्कृत लेखक तँ दाड़िमकेँ अनार कहै छथि [अनार- बाल लघुकथा संग्रह **(**मैथिली**)-** लेखक नारायणजी; साहित्य अकादेमी दिल्ली बाल साहित्य पुरस्कार २०२४ https://sahitya-akademi.gov.in/pdf/Pressrelease_BSP-2024.pdf], आ कालगेट टूथपाउडरक मॉडलक बाद दाड़िमक बीआ तँ सुशील सन माँजल कथाकारे लिखि सकैत छथि। अहाँ सही छी, ई अंश अछि मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ प्रेमकथा, प्रेम ने बाड़ी उपजय, केर। नहिये प्रेम बाड़ीमे उपजै छै नहिये प्रेम कथा।

’झिझिर कोनाक कोन दोख हइ? ई तऽ छूबेवला खेले हइ। हम सब नञि खेलेबै तऽ संसार सऽ खेल उठि जेतै?’

पिपनीपर नोर

एतऽ भोरुका टहलनाइसँ कथा प्रारम्भ होइतअछि, डी.आइ.जी. साहेब इशारामे बात करै छथि, कर्मक फल, बोनमे छोड़ि देब नवतुरिआ सभकेँ, ओकर सभक वन्देमातर**म् बा**जब, डी.आइ.जी. साहेबक ई कहब जे वर्दी उताड़ि लिअ **तँ** बनि जाउ मनुक्ख आ पहीरि लिअ तँ बनि जाउ राक्षस। आ आर सभ तत्त्व जे आधुनिक लघुकथामे हेबाक चाही।

पुश्त.. पुश्त.. पुश्त

वएह पारिवारिक झमेला, गाममे असगर बूढ़ा-बूढ़ी, बच्चा सभ बाहर, आ तकरा शिल्पक कलासँ बान्हि दै छथि कथाकार। रामायणसँ शुरू होइए कथा आ कत्तऽ सँ कत्तऽ पहुँचि जाइए।

एकटा कलाकारक आत्महत्या

कलाकार कला छोड़ि देलक तँ भऽ गेल आत्महत्या। आ किए ओ छोड़ि देलक चित्र लिखनाइ?

घरमुँहा आ सनकिरबा

घरमुँहा आ सनकिरबा मध्यवर्गीय लोकक कथा अछि। घरमुँहामे असगर नोकरिहाराकेँ पत्नी मोन पड़ै छथिन्ह। सनकिरबामे घरक घूरधुँआक बीच आतंकवाद, अविभाजित भारत आ सनकिरबा सभ अछि।

गाम सधबा होइत अछि

पत्र शैलीमे कथा, गामक सेवा लेल अवकाश प्राप्तिक बाद गाम दऽ कऽ रहब, दवाइ-दारू, नारी विमर्श आ पतिक आ बेटाक संग।

प्रवीर मायक चरित्र सभसँ बलगर। **किछु धन्धाक राजनीति।** बादमे पता चलैए जे दोसर दवाई दोकानबलाक राजनीति रहै। **अस्मिता** अछि टाइटल कथा। महिला सशक्तिकरणक कथा, महिला मुखियाक बदला जेना मुखिया-पति सभ काज करै छथि आ महिला-मुखिया मात्र हस्ताक्षर करै छथि तहिना वार्डक महिला-मेम्बर सेहो मात्र आँखि मुनि हस्ताक्षर करै छथि। मीनाक्षी मुदा आब से नै करती, आन महिला सदस्य संग छथिन आ एकटा पुरुष सदस्य सेहो। **भोकाटा** अछि विधवा सावित्री आ मंतोरक कथा। निर्मल प्रामाणिक सेहो छथि। **असल बात जड़िअओठा** मे **सेहो धन्धाक राजनीति होइए से** बादमे पता चलैए जे दोसर खानगी पढ़ौनीक वृत्तिबला दोकानबलाक राजनीति रहै। जेना गाम सधबा होइत अछि मे दोसर दवाई दोकानबलाक राजनीति रहै। अस्मिता, भोकाटा आ असल बात जड़िअओठा तीनू कमजोर कथा अछि। कथाकार थाकि गेल छथि।

बाट ताकैत एकटा सेहंता

तिरपित, रमनू, गामक इसकूल। रब्बी, भदइ, कुसियार मुदा भरि साल खेत मे लागले रहै छै। ओ ने रब्बी छिऐ आ ने भदइ, ओ छिऐ कैश क्रॉप। मुदा गामक स्कूलमे मास्टर सब अबिते ने छै, जे अबितो छै से सुतैय्ये लेल। मुदा महीसक आवेदन पास भऽ गेलै, इसकूलक हाल तँ पूरा देशमे ओहने छै।

मात्सर्य

रामलालकेँ पेमेंट भेटलै, दू टा पाँच सय टाका, की फेरसँ गानत,

सोझाँमे पेमेंट बाबू गानि कऽ तऽ देनहिये छै। मुदा बादमे ओकरा पता चललै जे एकटा पाँच सयक नोट बेशी छै। ओ घुरि कऽ जाय आपस करैले आकि नै, कथाकार ओकर सभ मनःस्थितिक विवरण करैत-करैत कथाकेँ नीक जकाँ सम्हारैत छथि।

विज्ञापनक करामात

रोज अगरबतीक प्रचार टी.वी. पर आयल छै, दस टाकाक एकटा, महग, पण्डीजीक बेटीकेँ वएह चाही। आगाँ देखू विज्ञापनक कमाल।

मस्जिद

सुशीलक सभसँ बेशी चर्चित कथा। देवकान्तक गुरुकेँ नमाज पढ़ैले दूर जाय पड़ै छै, ओ गुरुजी लेल मस्जिद गामेमे बनबाबैए, सभक सहयोगसँ। देवकान्त पत्रकारकेँ कहै छै– अयोध्याक राम मन्दिर ओतुक्का लोक पर छोड़ि देतै। मुदा छोड़तै नञि, से जानि लिअ।... एहन त कतेक उदाहरण भेल हेतै देशमे। कोनो फरक पड़ै छै?

हड़ताल

भोला मैट्रिक पास केलक। अड्डापर कनी दिन रहल, फेर पार्टी छोड़लक, दुनू भाँइकेँ दूटा दोकान छै, एकरो इच्छा रहै नीक दोकान खोलबाक। मुदा तइ लेल पूँजी चाही। से चाहक दोकान खोललक। आइ हड़ताल छै, सभ धमका कऽ गेल छै, दोकान बन्न करैले कहि कऽ। मुदा ई एक पट्टा खोलि कऽ रखनेआछि। सरकारी पार्टीबला सबाशी दै छै, बन्न करेनिहारकेँ ओ सभ देख लेतै। चाह

पीबि कऽ पाइ दऽ कऽ ओ सभ बहरा जाइ छै। फेर पुलिस सभ आबै छै, चाह पीबि कऽ बिनु पाइ देने बहरा जाइ छै।

फेर दुनू पार्टी बेरा बेरी अबै छै।

पाइप गनक गोली ओकरा लागै छै, ओ मरि जाइए। साँझमे ओकरा शोकमे मौन जुलुस निकलै छै।

सड़क

गाममे सड़क बनतै, मुदा जकर घर सड़कमे पड़तै से विरोध कऽ रहल छै। सड़कक फाएदा तखने छै जखन गाम दऽ क जेतै। बैसार होइ छै। गामक काते-काते सड़क जेतै, निर्णय भेलै। सभ सोचऽ लागल, क्यो रिक्शा कीनत, कियो जीप भाड़ापर चलायत। स्कूल लग बस अड्डा बनि जेतै तँ किछु लोक दोकान आ चक्कीक बात सोचि रहल अछि। सुकरू चाहक दोकान खोलि लेत, महींस रखबामे बड्डु बेइजत्ती छै, कतबो नाथ कसू, जजाति लपकिये लै छइ। आसाम आ कलकत्तासँ कय बेर घूमि आयल अछि। मुदा लम्बोदर बाबू..

नै बनत सड़क। चलू आधा जिनगी तँ बीतिये गेल अछि।

कतहु नहि

चलितर ठेंगा टेकैत जा रहल अछि, बहुत दिनक बाद निकलल अछि, चकुआ-चकुआ कऽ देखि रहल अछि। गाम नव सन, अनठिया गाम सन लागि रहल अछि। पन्द्रह अगस्त, उद्घाटन, वन्दे मातरम्, रस्सीक छोर चलित्तर केर हाथमे धरा देल जाइ छै। एकटा ठोंगा ओकरा देल जाइ छै, एकटा आरो देल जाइ छै। छोटे बाबू

ढरि गेलथिन, प्रीतमकेँ दू दिन पहिने कहने रहथिन, पनरह अगस्त दिन रहै लेल, मुदा ओ कोनो बहन्ने बहीन ओतऽ काल्हिये चलि गेल। ओ एत्तै तँ सभटा बुझबे करतै, एहेन गप छपित नै रहै छै। देह सिहरि गेलै।

सभटा रेहल-खेहल

टेन गाड़ी, गप-सरक्का, फेर डकैती। फेर आर.पी.एफ. केर आयब। ई सभ यात्री तँ बर्ख मे एक-दू बेर अबैए, टेन गाड़ीकेँ तँ सभटा रेहल खेहल छै।

उत्तरपक्ष

अध्याय १

सिद्धान्त

मार्क्सवादक अलाबे आन समकालीन सिद्धान्त राजनीतिसँ दूर रहल। मुदा समकालीन सिद्धान्त सभ राजनीतिमे तँ नै मुदा दर्शनमे क्रान्ति सन आनि देलक।

मार्क्सवाद सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि आ द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनबैत अछि।

फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमय मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत अछि।

नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।

आब दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दर्शनक आगमन (विशेषसँ सामान्य) आ निगमन (सामान्यसँ विशेष) क अध्ययन प्रणाली विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल।

अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि। साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण- विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर

टीका, सत्य-असत्य, सभक अपन-अपन दृष्टिकोणसँ वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावनाक रहि-रहि खतम होएब, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै, सतही चिन्तन, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै कएक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास, भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ उत्तर आधुनिकता सोझाँ अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक ई विरोध केलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल। उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जाक डेरीडा भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध केलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकैत छी।

प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि।

विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत

अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि।

अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि, स्वतंत्र होयाबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र)।

हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देल गेल।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकतासँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक “अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि। “गॉड” पार्टिकल विश्वक प्रारम्भक व्याख्याक प्रयास अछि।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नै वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ

ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल।

नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।

फेर पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल-लंगुएज गेम (विटगेन्सटाइन)।

पूँजीवादक जन्म भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि।

इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था। मिकेल फोकौ कहै छथि - ज्ञान आ सत्य बनाओल जाइत अछि। डेलीयूज आ गुटारी कहै छथि जे हम सभ इच्छा ऐ द्वारे करै छी कारण हम सभ इच्छा मशीन छी।

मिखैल बैखटिन भाषाकेँ सामाजिक क्रियाक रूपमे लै छथि। रूसक रूपवादी विचारक साहित्यकेँ मात्र भाषाक विशिष्ट प्रयोग मानै

छथि।

जीन फ्रान्कोइस लियोटार्ड कहै छथि- सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी अछि। बौड्रीलार्ड कहै छथि- विज्ञापन आ दूरदर्शन सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने अछि। दुनू उत्तर आधुनिकताक मुख्य विचारक छथि।

लाकानक विशेषता छन्हि जे ओ फ्रायडक पद्धतिक भाषिकी अनुप्रयोग केलन्हि अछि। ओ कहै छथि जे अचेतनताक संरचना भाषा सन छै। जखन बच्चा भाषा सीखैए तखन ओकरा एकटा चेन्ह लेल एकटा शब्द सिखाओल जाइ छै। इच्छा, त्रुटि आ आन ई तीनटा तथ्य लाकान नीक जकाँ राखै छथि। इच्छा आवश्यकता आ मांगनाइ दुनू अछि मुदा एकरा ऐ दू रूपमे विखंडित नै कएल जा सकैत अछि। आनक वर्णनमे त्रुटि आ रिक्तता अबैत अछि। विषय अर्थक क्षणिक प्रभाव अछि आ ई आन सन हएत जखन ई आभासी हएत आ त्रुटिक कारण बनत, जइसँ इच्छाक उदय हएत। उत्तर उपनिवेशवादक तीन विचारक छथि- होमी भाभा (फोको आ लाकानसँ लग), गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक (फोको आ डेरीडासँ लग) आ एडवर्ड सईद (फोकोसँ लग) जे उपनिवेशवादीक पूर्वक धूर्तताक, शिथिलता आदिक धारणाक लेल कएल गेल कार्य आ सिद्धांतीकरणक व्याख्या करै छथि।

रेमण्ड विलियम्सक संस्कृतिक अध्ययन साहित्यक आर्थिक स्थितिसँ सम्बन्ध देखबैत अछि।

नव इतिहासवाद इतिहासक शब्दशास्त्र आ शब्दशास्त्रक

ऐतिहासिकताक तुलना करैत अछि।

एलीन शोवाल्टर महिला लेखनक मानसिक, जैविक आ भाषायी विशेषताकेँ चिन्हित करै छथि।

सिमोन डी. बेवोइर नारीक नारीक प्रति प्रतिबद्धतामे वर्ग आ जातिकेँ (जकर बादक नारीवादी सिद्धांत विरोध केलक) बाधक मानै छथि।

वर्जीनिया वुल्फ नारी लेखक लेल आर्थिक स्वतंत्रता आ निजताकेँ आवश्यक मानै छथि। हिनकर विचारकेँ क्रान्तिकारी नै मानल गेल। मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट नारी शिक्षामे क्रान्ति आ औचित्यक शिक्षाकेँ सम्मिलित करबापर जोर देलनि।

नव समीक्षा- इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध केलन्हि आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। विमसैट आ वर्डस्ले कहलनि जे कविक उद्देश्य वा ऐतिहासिक अध्ययनपर समीक्षा आधारित नै रहत। ई पाठकपर पड़ल भावनात्मक प्रभावपर सेहो आधारित नै रहत कारण से सापेक्ष अछि। ओ आधारित रहत वास्तविक शब्दशास्त्रपर।

फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी- ओ कविताकेँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि।

जॉन ड्राइडन- प्राचीन साहित्यमे नैतिक प्रवचनपर आ एकर लाभ-हानिपर विचार केलनि।

सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि।

रूसोक रोमांशवाद मनुक्खक नीक हेबापर शंका नै करैए (क्लासिकल समीक्षक शंका करै छथि मुदा नव-क्लैसिकल कहै छथि जे मानव स्वभावसँ दूषित अछि मुदा संस्था ओकरा नीक बना सकैए) मुदा संगे ई कहैए जे संस्था सभ दूषित अछि आ मात्र दूषित लोकक मदति करैए।

आधुनिक स्थितिवाद -साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै- पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकरा बाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझैए।

उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकताक। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए।

विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आयल।

उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकेँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत जेना असफल उद्देश्यकेँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए।

संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकेँ बल भेटलै (अलथूजर)। आधुनिकतावादी-स्थितिवादी, नव समीक्षा, संरचनावाद आ उत्तर

संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद आयल जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिक जेनसन)।

१९७० ई.क बाद आधुनिक शब्द एकटा सिद्धांतक रूप लऽ लेलक से उत्तर-आधुनिक शब्द पारिभाषिक भेल जकर नजरिमे लौकिक महत्वपूर्ण नै रहल। आधुनिक काल धरिक सभ जीवन आ इतिहास अमहत्वपूर्ण भेल आ खतम भेल। ई सिद्धांत भेल इतिहासोत्तर, विकासोत्तर आ कारणोत्तर। सत्य आ आपसी जुड़ावक महत्व खतम भऽ गेल।

जादुइ वास्तविकतावादमे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि। रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि।

उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोक कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारत आ नेपालमे पैघ समस्या अछि।

उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। जेना ऐतिहासिक विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि, संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तेँ ई उपयोगितावाद आ

चार्वकक दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथास्थिवादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै हएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आओत।

डेरीडाक विखण्डन पद्धति ऊँच स्थान प्राप्त रचना/ लेखक केँ नीचाँ लऽ अनैत अछि आ निचुलकाकेँ ऊपर।

रोलेण्ड बार्थेस लिखै छथि जे जखन कृति रचनाकारसँ पृथक भऽ जाइए आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्र रूपेँ होमए लगै छै तखन कृति महत्वपूर्ण भऽ जाइए जकरा ओ रचनाकारक मृत होएब कहै छथि। उत्तर-संरचनावाद संरचनावादक सम्पूर्ण आ सुगठित हेबाक अवधारणाकेँ माटि देलक।

सौसरक भाषा सिद्धान्त- बाजब/ लिखब, वास्तविक समएक साहित्य वा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक शब्दशास्त्र, महत्वपूर्ण कोनो कृति वा मनुक्ख अछि, महत्ता एकटा भाव अछि, वास्तविक समएमे भाषा वा एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; मुदा एकरा सेहो डेरीडाक विखण्डन सिद्धान्त उल्टा-पल्टा करए लागल।

नारीवादी दृष्टिकोण कहैए जे सभटा सिद्धांत पुरुष द्वारा बनाओल गेल से ओ सिद्धांत पूर्ण व्याख्या नै कऽ सकैए।

सरल मानवतावाद ऐ सिद्धांत सभक विरुद्ध आएल मुदा ई सेहो एकटा सिद्धांत बनि गेल। सार्थक साहित्यक निर्माण एकर अन्तर्गत

भेल।

मनोविश्लेषण आ द्वन्द्वात्मक पद्धति जकाँ फुकियामा आ डेरीडाक विश्लेषण सेहो संश्लेषित भऽ समीक्षाक लेल स्थायी प्रतिमान बनल रहत।

तँ साहित्य आदर्शवादी, प्रकृतिवादी, यथार्थवादी, मानवतावादी, सामाजिकतावादी वा अनुभवकेँ महत्व देमयबला ज्ञानेन्द्रिय-यथार्थवादी हुअयअ। बा प्रयोजनमूलक हुअय, ऐमे उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कारणवाद, अर्थक्रियावाद आ फलवाद सभ सम्मिलित अछि। ई सभसँ आधुनिक दृष्टिकोण अछि।

जुलिया क्रिस्टोवाक अनुसारे बेटा अपनाकेँ मायसँ दूर करैत अछि, मुदा बेटीमे ओ लय, ओ गुण रहिते छै से ओ दूर होइतो मायसँ, संस्कृतिसँ लग रहैत अछि। जुलिया क्रिस्टोवाक पुरुख, आ ओकर ऐंठीक कारण यएह अछि।

जूलिया क्रिस्टोवा अपन प्रस्तुति "वर्ड, डायलॉग एण्ड नोवल"मे इण्टर-टेक्स्टुअलिटी माने अन्तर-पाठ्यताक संकल्पना देलन्हि, मने कोनो पाठ एकटा देबारमे बन्न नै रहि सकैए। से ओ पाठकेँ संकलन कहै छथि। पाठ अभ्यास आ उत्पादनक विषय अछि। से पहिनेसँ समाज-संस्कृतिक पाठ आ साहित्यिक पाठ दू तरहक स्वर निकालैत अछि। विचारधाराक संघर्ष आ तनावकेँ पाठ समाहित करैत अछि। जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरीमे सोझे लेखक आ पाठकक बीच वार्ता होइ छै। माने लिफाफक

बौस्तु आ लिफाफपर लिखल पता केर बीच सोझे वार्ता होइ छै। मुदा जुलिया क्रिस्टोवाक उर्ध्वाधर सम्बन्ध बला धूरीमे "पाठ" मूलधाराक साहित्य संगे सेहो आ एकटा छोट कालावधिमे भेल घटनाक बीच वार्ता करैत अछि। माने पाठ आ ओकर सन्दर्भक बीच वार्ता होइ छै, एक लेखकक पाठ दोसरक लेखकक पाठ संग वार्ता करैए। ई दुनू धूरी जखन एक दोसराकेँ काटैए तखन शब्द बा पाठ उत्पन्न होइए जइमे कमसँ कम एकटा आर पाठ पढ़ल जा सकैए। जुलिया क्रिस्टोवा बोली-बानीकेँ यथावत राखबाक आ किछु पाठ, जे मनुक्खसँ अलग अछि, केर रूपमे लेखकक अधिकार आ कर्तव्यक वर्णन करैत छथि। जूलिया क्रिस्टोवाक प्रस्तुति "वर्ड, डायलॉग एण्ड नोवल" मिखाइल बाखतिनक संकल्पनाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। संगहि जुलिया क्रिस्टोवा भाषाक संकेत आ प्रतीकक रूपमे सेहो विश्लेषण करैत छथि। जखन बच्चा संकेतक रूपमे, लयसँ गप करैत अछि तँ ओइमे संरचना नै होइ छै, अर्थ नै होइ छै। मुदा जखन ओ पैघ होइए तँ ओकरा अपना आ आनमे अन्तर बुझाइ छै, ओ बाजऽ लगैए आ अङनासँ बहराइए। आ तकरा बाद ओ अपनाकेँ मायसँ दूर करैए। मुदा ओ लाक्षणिक सँ एकदम्मे दूर नै होइए वरन् लाक्षणिक आ प्रतीकात्मकक बीचमे झुलैत रहैत अछि। लाक्षणिक स्त्री गुण, संगीतमय, कविता आ लय सँ युक्त; आ प्रतीकात्मक पुरुष गुण, विधि आ संरचनासँ युक्त रहैत अछि। से चलचित्र आदिमे महिलाक शरीरक आ ओकर किरदारक जे अवमूल्यन पुरुष द्वारा कएल जाइत अछि से मायक

शरीर द्वारा ओकर अस्तित्वक खतराक डर अछि। मुदा बेबी चाइल्ड अपन मायसँ लग रहैत अछि से ओ लाक्षणिक स्त्री गुणी, संगीतमयी, कविता आ लय सँ बेशी युक्त रहैत अछि, से ओ मायकेँ अस्वीकार तँ करैत अछि मुदा ओकरेसँ अपनाकेँ परिभाषित करैत अछि। जाक डेरीडा योनि केन्द्रित विखण्डनात्मक सिद्धान्तसँ नारीवादी विचारधारामे जे हस्तक्षेप करै छथि तकर कोर्नेल समर्थन करैत छथि आ गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक स्वागत। किछु दार्शनिक विचारधारा जइ प्रकारसँ योनीकेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ महत्व दइए ततऽ डेरीडा द्वारा योनि-केन्द्रित दृष्टिकोणक सीमाक प्रति ध्यानाकर्षण एकटा सार्थक हस्तक्षेप अछि आ तइसँ प्रतीकक घटकक फेरसँ एकटा प्रक्रियाक अन्तर्गत परिभाषा देब सम्भव भेल अछि। डेरीडा आपसमे होइबला सम्वादक गुणनखण्डक असम्भाव्यताकेँ देखबै छथि, ओकरा सरल नै कएल जा सकैए। से स्त्रीकेँ अनुमान आ ज्ञानक वस्तुक रूपमे नै देखल जेबाक चाही। पुरुषत्वक सापेक्ष नारीवादकेँ नै देखबाक चाही वरन् नारीवाद लेल एकटा अलगे मोहाबरा बनेबाक खगता अछि। से पाठ, डेरीडा कहै छथि, मोटामोटी एकटा राजनैतिक कार्य अछि जे शक्ति-सम्बन्ध बा तकरा लेल होइत वार्ताक रूपमे परिभाषित कएल जा सकैए। मुदा डेरीडापर आरोप अछि जे ओ नारीक अबाजकेँ पुरुष द्वारा अधिगृहीत करबाबय चाहैत छथि, नारीक एतेक यत्नसँ जे बकार फुटल छन्हि, जे ओ अपना लेल बाजि रहल छथि, से अधिकार ओकरासँ छीनऽ चाहैत छथि। डेरीडाकेँ महिलाक दिन-प्रतिदिनक

होइत समस्या आ शक्तिहीनतासँ कोनो मतलब नै छन्हि। डेरीडा विखण्डनात्मक पद्धतिकेँ नीक आ धनात्मक रूपमे लइ छथि आ नारीवादकेँ अस्तित्वक तत्त्वमीमांसाक/ तर्कक द्वैधक रूपमे राखैत छथि, जेना पुरुष स्त्री। डेरीडा पाश्चात्य दर्शनक केन्द्र आधारित संरचनाक मोहकेँ उघार करैत छथि। सौसियोरक भाषाविज्ञानसँ प्रेरित संरचनावाद सांस्कृतिक अस्तित्वक वैज्ञानिक विश्लेषणक प्रयास करैत अछि। लेवी स्ट्रॉसक संरचनात्मक मानव विज्ञान सएह लोकगाथा लेल करैत अछि। तहिना साहित्यमे गद्य आ पद्य लेल संरचनात्मक विश्लेषणक प्रयास कएल जाइत रहल अछि। मुदा डेरीडा एकरा उघार करैत छथि, संरचनावाद अपन विश्लेषण लेल एकटा ठोस आधार ताकैत अछि, व्यवस्थाक बाहर एकटा केन्द्र जइसँ ओ एकर वैज्ञानिक विश्लेषण कऽ सकय, मुदा से मात्र दार्शनिकक आभास मात्र अछि। माने कोनो लोकगाथाक कोनो स्थायी बा निर्धारित संरचना केना भऽ सकैए। से लोककथा बा लोक गाथाक संरचनाक अध्ययन करबा लेल अहाँकेँ ओ विचार बा ओ केन्द्र, जकर आधारपर अहाँ एकर विश्लेषण करऽ चाहैत छी, निर्धारित करऽ पड़त। डेरीडा कहै छथि जे कोनो संरचना लेल ओकर संकल्पना-विचार आवश्यक अछि, फेर टुकड़ी-टुकड़ी जोड़ि कऽ अहाँ ओकरा बनायब। मुदा बिनु अन्त सोचने संरचना सम्भवे नै अछि। आ से साहित्यमे सेहो अछि। यावत अहाँ कोनो रचना लेल एकटा स्वयंसिद्ध अर्थ नै ताकि लैत छी ओकर संरचना अहाँ नै ताकि सकै छी, कारण अर्थ माने अन्त ओकर संरचनाकेँ

निर्धारित करैत अछि। से संरचनावादीकेँ अर्थ पहिनहियेसँ पता रहै छै आ तखने ओ ओकर विभिन्न अंग आ तकर आपसी सम्बन्धकेँ विश्लेषित कऽ सकैए। आ यएह विश्लेषणसँ पहिले ज्ञात स्वयंसिद्ध अर्थ अछि डेरीडाक केन्द्र। आ डेरीडा कहै छथि जे यएह निर्धारित करैत अछि जे पाठक संरचना केना बनत, कोन अंगकेँ लेल जायत आ कोन अंगकेँ छोड़ल जायत। से जखन हम साहित्यक संरचनाक विश्लेषण करैत छी तँ ओकर अर्थ आ ओकर प्रभावक गप करैत छी तँ हम ओइ संरचनासँ ओइ तत्त्व सभकेँ चिन्हबाक, फराक करबाक प्रयास करैत छी जे ओइ प्रभाव लेल उत्तरदायी अछि, से ओइ सम्भावित पैटर्नकेँ हम छोड़ि दैत छी जे ओ प्रभाव नै आनत। से ई केन्द्र आरम्भिक स्थल अछि संरचनाकेँ बुझबाक हेतु। मुदा ई विश्लेषणकेँ सीमित सेहो करैत अछि। कारण केन्द्र अपनाकेँ स्थिर रखबाक लेल स्तरीकरणक निर्माण करैत अछि, आ ओकरा पर नियंत्रण करैत अछि। आ ई अर्थक पूर्व ज्ञान पाठकक पूर्व इतिहास आ समकालीन आलोचना सिद्धान्त आ विचारधारापर निर्भर सेहो करैत अछि, ईहो सभ तँ संस्कृतिक अंग अछि तखन केना एकरा सभकेँ संरचनासँ दूर राखल जाइए जे एकरा सभकेँ सीमित करैए मुदा अपने एकरा सभसँ सीमित नै होइए? से अपन विश्लेषणक आधार कोनो स्थायी केन्द्रकेँ बनायब एकटा नुस्खा देब सन अछि आ ई प्रतिक्रियावादी बा यथास्थितिवादी स्थिति अछि। आ ऐ सँ मानक आ गएर-तुलनात्मक स्वतंत्र अर्थ निकालबाक मात्र इच्छा सिद्ध होइए। से ई

भ्रम जे हम संरचना ताकि रहल छी भ्रमे अछि, वास्तवमे अहाँ पाठ्य सामग्रीसँ संरचनाक निर्माण कऽ रहल छी।

से डेरीडाक उत्तर संरचनावादमे सेहो केन्द्रक बिना प्रारम्भ नै भऽ सकैत अछि मुदा ओ ऐ सिद्ध नै भेल स्वयंसिद्धक विखण्डनात्मक विश्लेषणक आधारपर ओइ केन्द्रकेँ दोसर केन्द्र द्वारा स्थानापन्न करैत अछि मुदा ई नव केन्द्र सेहो स्थायी नै रहत।

तहिना सौसियोर (Saussure) अपन प्रतीक सिद्धान्तमे प्रतीकक विश्लेषण करैत छथि जे कोनो शब्द जेना बिलाड़ि-बिलाड़ि अछि कारण ओ किछु आन नै अछि। से शब्द अछि प्रतीक चिन्ह आ जकरा ओ दर्शाबैत अछि से अछि बौस्तु/ प्रतीक। मुदा डेरीडा कहै छथि जे अहू लेल पहिने एकटा संकल्पना आनऽ पड़ैत अछि। आ जँ अहाँ प्रतीक चिन्हकेँ निरपेक्ष बना देब जे ओकर कोनो प्रतीकसँ सम्बन्ध नै छै, जे स्वयंमे एकटा स्वतंत्र संकल्पना अछि आ कोनो प्रतीक/ बौस्तुसँ ओकर कोनो प्रत्यक्ष सम्बन्ध नै छै, मुदा तखन ई संकल्पना सभ प्रतीक चिन्हकेँ पार कऽ जायत आ किछुओ सूचित नै करत। आ जँ हम प्रतीक आ प्रतीक चिन्हकेँ एक्के मानी तँ प्रतीक चिन्हक जड़ियेपर चोट पहुँचत।

से सौसियोरक सिद्धान्त तर्काधारितक विपक्षमे अछि जखन ओ कहैत अछि जे प्रतीक चिन्हमे अहाँ प्रतीकक कोनो लक्षण नै देखू। मुदा जखन ओ कहैत छथि जे प्रतीक चिन्ह प्रतीककेँ लक्षित करबा लेल मात्र प्रयुक्त होइत अछि आ तेँ ओकर अधीन अछि ओ तर्क आधारित सिद्धान्तक पक्षमे बुझाइत छथि। से डेरीडा कहैत छथि

जे प्रतीक आ प्रतीक चिन्हक ई स्पष्ट भेद मान्य नै अछि, आ प्रतीककेँ प्रतीक चिन्हक ऊपर देल वरीयता सेहो उनटेबाक खगता अछि।

प्रतीक चिन्हमे अर्थ पहिनहियेसँ विद्यमान नै रहै छै। आ पूर्ण अर्थ कोनो एकटा प्रतीक चिन्हमे नै भेटत। से पाठकेँ अहाँकेँ घोर-मट्ठा करऽ पड़त, आ ई अनन्त खोज दिस अहाँकेँ धकेलत। से ई प्रतीक चिन्ह दोसर प्रतीक चिन्हसँ अपन अन्तरक आधारपर प्रतीक निर्धारण करैत अछि, जतेक बेशी अन्तर ततेक लग अहाँ प्रतीकसँ होइ छी। मुदा ई कहियो नै हएत जे अहाँ सभटा अन्तर ताकि सकब। मुदा प्रतीक चिन्हमे बारम्बारता हेबाक चाही, तखनो जखन एक प्रतीक चिन्ह भिन्न प्रतीकक निर्धारण करैत अछि। आ ऐ लेल ओइ प्रतीक चिन्हक लिखित इतिहास जानब आवश्यक। से प्रतीक चिन्ह विभिन्न अर्थ आ कखनो काल उल्टा अर्थ सेहो देत।

प्लेटो- प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किए तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक रूपमे सेहो देखल जएबाक चाही।

डेरीडा लिखै छथि जे प्लेटोसँ सौसियोर (Saussure) आ लेवी स्ट्रॉस धरि सभ लिखलाहासँ ऊपर बजलाहाकेँ राखै छथि, कारण लिखब एकटा माध्यम अछि, असल चीज तँ वाणी अछि। सौसियोर लिखित रूपमे उच्चारण त्रुटिपर ध्यान दियाबैत छथि। मुदा डेरीडा कहै छथि जे ओ सभ विशेषता जे वाणीमे छै से लेखनमे

सेहो छै। आगाँ ओ कहै छथि, प्रतीकक विलुप्ति वाणीमे विचारक प्रत्यक्ष रहबाक भ्रम उत्पन्न करैए। मुदा जँ बाजल वाणीकेँ हम रेकॉर्ड कऽ कय सुनी तँ ओहो लिखल अक्षर सन प्रतीकक शृंखले अछि, जइमे विभिन्न प्रतीककेँ ओकर एक-दोसराक अन्तर सँ चिन्हल जा सकैए। आ लेखन सेहो सामान्य लेखन आ चित्रसँ बुझा कऽ कएल लेखन, ऐ दू तरहेँ भऽ सकैए। 'अपन अवस्थितिक तत्त्वमीमांसा' एकर सभक पाछाँ अछि। पाश्चात्य दर्शनक 'अपन अवस्थितिक तत्त्वमीमांसा'मे जे मुख्य अछि से अछि सद्यः अनुभव-मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे एहेन कोनो अनुभव परा-भाषा स्तरपर नै होइत अछि, कारण ई अनुभव भाषाक माध्यमेसँ चिन्हल जाइत अछि। फेर ई जे दैवीय चेतनासँ हम परम सत्यकेँ बुझैत छी मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे ई मात्र सर्जकक सृजन अछि। फेर ईहो जे कोनो बौस्तुक पाछाँ सत्य नुकायल अछि, मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे तेहन कोनो स्वतंत्र अस्तित्व नै होइ छै, सभटा निर्माण आ पुनर्निर्माण व्यवस्था द्वारा होइ छै। से सौसियोरक स्वतः उपस्थिति किछु नै अछि कारण सभटा व्यवस्थाक अन्तर्गत निर्मित अछि।

डेरीडा कहैत छथि जे तर्क ऐ सभटा दार्शनिक चिन्तनक आधार अछि, से कोनो अन्तिम सत्य आ विश्वात्माक परिकल्पना देल जाइत अछि जे सर्वज्ञानी अछि। मुदा डेरीडा कहै छथि जे ओ सिद्ध नै भेल केन्द्रकेँ कखनो गॉड, कखनो विचार आ कखनो विश्वात्मा कहल गेल आ ओ अपनासँ नीचाँ विभिन्न स्तरक निर्माण केलक।

से धर्म गॉडकेँ परम सत्य मानलक आ मनुक्ख आ आन रचनाकेँ ओ अपूर्ण आ विरोधी; आ ई सभटा केन्द्र बनल जे अपना हिसाबे विचार-व्यवस्था बनेबाक दावा केलक। मुदा एकरा सभकेँ व्यवस्थासँ ऊपर हेबाक चाही। से गॉडक स्वतंत्र रूपसँ धर्मक बाहर उपस्थिति हेबाक चाही। उत्तर संरचनावादी विखण्डनवाद एहेन कोनो परासत्यक उपस्थितिकेँ आभासी मानैत अछि, आ उत्तर संरचनावादी एकरा भाषाक सिद्धांतक परिणाम मानैत अछि । से ऐ प्रतीक चिन्ह सभक आपसी खेलमे किछु अर्थ कोनो विचारधाराक हस्तक्षेपसँ उच्च स्थान प्राप्त करैत अछि आ ओकर दोसर अर्थ तकर पाछाँ जेबा लेल धकेल देल जाइत अछि। स्वतंत्रता, गणतंत्र, न्याय आदि सन विचारधारा हमरा सभक जिनगीक भाग छी मुदा लागैए जे ओइ सभसँ हमरा सभक जिनगीक बहुत रास अर्थ निकलल मुदा अन्वेषणक उपरान्त ओ सभ दोसर विचारसँ बहार भेल बुझायत। कोनो संकल्पना एहेन नै अछि जइमे दोसर विचारक अवशेष नै भेटय।

"गैसलाइटिंग"क प्रतिकारमे अबैत अछि स्टोरी साइंस, कोन कथा सुनेलासँ लोक आ समाजपर की असर पड़त, ई ओइ आधारपर पूर्व-विश्लेषण करैत अछि।आ स्टोरी साइंस सेहो सएह कहैए, जे कथा सुनायत से करत राज, आ जे जत्ते कथा सुनाओत से तत्ते आगाँ बढ़त।

"जे सुनबैए खिस्सा से राज करैए ऐ संसारपर"- होपी अमेरिकी कबीलाक लोकोक्ति।

काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण)। कृष्ण भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी, एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। रस सिद्धान्त: भरत:- नाटकक प्रभावसँ रसक उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी)सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी। भट्ट लोलट:- स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। शौनक:- शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द

अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि।

ध्वनि सिद्धान्त: आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक- साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब अछि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक, ई दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि, ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित हएब सम्भव नै अछि।

स्फोट सिद्धांत: भर्तृहरीक वाकपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक

अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण हएबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जाक डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि।

अलंकार सिद्धान्त: भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे।

औचित्य सिद्धान्त: क्षेमेन्द्र औचित्य विचार चर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस,

कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे।

टॉम स्टोपार्डक रेडियो नाटक “इन द नेटिव स्टेट” आ ओइपर आधारित हुनकर नाटक “इण्डियन इंक” रस सिद्धान्तक विस्तृत चर्चा करैत अछि। जॉन केजक “सोनाटाज एण्ड इण्टरल्यूड्स” मे सेहो रस सिद्धान्त आधारित धुन सभ अछि। संगे रिचा बिस्वाल “Analysis of John Donne's Poetry in the Light of Bharata's Rasa-Theory” लिखलन्हि जे कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेकसँ प्रकाशत अछि।

सुशील चारियेटा पोथी लिखलनि, दूटा उपन्यास, एकटा नाटक आ एकटा लघुकथा संग्रह। रामलोचन ठाकुर अस्मिताक आमुखमे लिखै छथि- “ई बहुत रास कथा लिखने छथि, किन्तु सभ पुस्तकाकार प्रकाशित कराएब सम्भव नहि।”

दुनू उपन्यासमे सेहो हमरा लागल जे उपन्यासकार सुशीलपर कम पन्नामे लिखबाक दवाब छलन्हि, मुदा ओत्तौ ओ थाकल नै लगला। अस्मिता, भोकाटा आ असल बात जड़िअओठा तीनू कमजोर कथा लागल, कथाकार थाकल बुझेला। मुदा कथाकार थाकि गेला आकि थका देल गेल। मैथिलीक छद्म समीक्षा हुनकर हत्या कऽ

देलक। हिनकर कथा 'एकटा कलाकारक आत्महत्या' मे कलाकार कला छोड़ि देलक तँ भऽ गेल आत्महत्या; मुदा जँ दोसर ओइ लेल दोषी अछि आ तँ ओ छोड़ि देलक कथा-उपन्यास-नाटक लिखनाइ तँ ई भेल हत्या।

उपन्यासमे सुशील एकटा समय-स्थानक खाका खीचि दै छथि। जेना घराड़ी (१९७३) (उपन्यास)गामक दलानपर प्रारम्भ होइत अछि, दलानपर की-की राखल रहै छै आ तइ दलानक सोझाँक दृश्य सेहो। फेर मिलिट्री मैन रतन अबैए जकर घराड़ी जोति लेल गेल छै। गाम आ बहरियाक संघर्ष शुरू। घराड़ीक मोह, लालबाबू बदलेन करैले तैयार छथि बरू दू कट्ठा बेसी देता मुदा रतन बदलेन नै करत, दोसर ठाम उपटि कऽ किए जायत? जकर जन्म नग्रमे भेल छै ओकरा घराड़ीक मोह बुझैमे दिक्कत हेतै। घराड़ीक लेल रतनक छोटका भाइ महादेबक हत्या भऽ जाइ छै आ आरोप रतनपर लागि जाइ छै। ओ पड़ा जाइए। फेर पेंचपर पेंच। कथा शुरू होइए ब्राह्मण डॉबिनायक आ मलाह नर्स करुणाक। करुणा . कहैए, ई विवाह असम्भव अछि, ओ नीच जातिक अछि, मलाहक बेटी अछि आ बिनायक पैघ लोक। मुदा प्रेम तँ ओकरो छैहे। बिनायक करुणाकेँ कायर बुझैए। मुदा उपन्यासकार एकटा लाठी लेने बूढ़ाक प्रवेश ओकर स्वप्नमे करबै छथिन्हजे बिनायककेँ - कहै छथि जे जकरा बिनायक सबला बुझि रहल छथि ओ समाजक गनहायल परिपाटीक चलते अबला अछि।

ओम्हर रतन अपन मित्र शंकर भगवानक भक्त अवधेशक ताकिमे

अछि, निमतल्ला घाटमे भूतनाथ मन्दिरमे शंकर भगवानक शरणमे जाइत अछि। आ अवधेश भेट जाइ छै, भूपेन बोश एवेन्यूमे ओ पत्नी सुनीता संगे रहैए।

गामसँ नग्र, उपन्यासकारक विवरण आब दोसर दिशामे जाइए। रतनपर वारंट छै। फेर नग्रसँ गाम। कोन एहेन गप छै जे मलहा आ लालबाबूए टा कैँ बूझल छन्हि।

अवधेश संगे शेफालीसँ भेँट होइ छै। गपक क्रममे शेफाली कहै छथि जे अवधेश कतेक मैथिल सभकैँ नोकरी दियेलथिन मुदा वएह सभ हिनकर निन्दा करैत रहै छन्हि। शेफाली कहै छथिन जे शेफालीक मामा वकील छथिन्ह, ओ कहै छथिन्ह जे रतनक जीत हेतै मुदा असली हत्याराक पता सेहो लगबऽ पड़त। रतनकैँ विश्वास छै जे असली हत्यारा लालबाबूक जिरतिया परगा छै। शेफालीक पिता राय जी मैथिल आ माता बंगाली। से नग्रमे प्रेम विवाह एक पीढ़ी पहिने भऽ चुकल छै।

लालबाबू परगासक माध्यमसँ करुणाकैँ निपत्ता करबा देता। परगास चारि गोटेसँ गेल मुदा करुणा दाँत काटि कऽ अपनाकैँ छोड़ा लेलक। करुणा आ परगासक बियाह करा देता आ मामिले खतम। घर घुरै छथि।

एमहर नग्रक वर्णन। मिस्टर राय सभक बदौलत रतनकैँ नोकरीयो भेटलै आ जमानतो। परगासकैँ लालबाबू अन्तिम नाटक खेलेबा लेल कहै छथिन्ह।

अन्तिम खण्ड अछि खण्ड सत्रह। दुर्गा भसानक दिन। दुर्गापूजामे

तीनटा नाटक मंचस्थ कएल जाइए, दूटा मैथिली आ एकटा हिन्दी। भाषा विमर्श तइ दिनमे आबि गेल छल। रहस्योद्घाटन आ पश्चाताप। आ बिजयादशमीक नाटक समाप्त।

तँ घराड़ी उपन्याससँ मैथिली साहित्य पढ़निहारकेँ की भेटलै आ मैथिली साहित्यकेँ की भेटलै?

मैथिली साहित्यक पाठक लेलक टाइम-मशीनक अनुभवक सङे स्पेस-मशीनक अनुभव सेहो। सन् १९७३ मे हिन्दी नाटक मिथिलामे आबि गेल रहै। अन्तर्जातीय विवाहक स्वीकृति बाप नै दै छलै मुदा माय दऽ दै छलै। घराड़ी आ जमीन-जाल लेल हत्या तक होइ छलै। मिथिलेक लोक कलकत्तामे एक पुस्त पहिने अन्तर्जातीय विवाह कऽ रहल छल। एक वर्गमे शिक्षा रहै, मुदा दोसर वर्गकेँ हतोत्साहित कएल जाइ, जमीन खेती लेल देल जाइ मुदा बिनु रजिस्ट्रीक। जमीन-जथा बला लोकक दलानपर संदूक होइ छलै, दरबज्जापर बड़द। कलकत्ता (आब कोलकाता) मे बाते अलग रहै। मुदा ओत्तौ जइ मैथिलकेँ नोकरी लगाउ सएह खिधांश करत।

गामबाली (१९८२) (उपन्यास) एक डेगा आगाँ बढ़ैत अछि। घराड़ी उपन्यासमे बादमे खुलासा भेलै जे लड़की मलाह नै ब्राह्मणे रहै। मुदा गामबालीमे से खगता उपन्यासकारकेँ नै पड़लन्हि। ओ आब लिव-इन रिलेशन (बिनु बियाहक संग रहनाइ), ओइसँ भेल बच्चा, ओकर गाममे स्वीकृति, पढ़ुआ सभक आगाँक सोच सभ किछु आनि लेने छथि। पहिने श्वेतक जमाना रहै.वी.श्याम टी-,

१९८२ मे १९ नवम्बरकेँ भारतमे एशियाडक उद्घाटन भेलै आ ओही दिनसँ रंगीन टी क प्रसारण दूरदर्शन करऽ लगलै। घराड़ीक.वी. लालबाबूसँ भिन्न स्थिति अछि मालिक माने सोनमनि झा केर। ओ छथि पाउपाउ करैत।- माने जमीन्दारीक अन्त बुझू। गामबालीक संस्कार जादव समाज मिलि कऽ करतै। गोअर टोली, बभन टोली, कैथ टोली, जोलहा टोली। ई सभ टोल छै। गामबालीक वर बूढ़, से बाल विवाह छै। ओ तेसर बहु छली, से बहुविवाह सेहो छै, हिन्दू मैरेज एक्ट १९५५ मे लागू भेलै मुदा मिथिलाक गाममे १९८२ मे छपल उपन्यासमे ओ लागू नै छै, नग्र सभक वी.आइ.पी. मोहल्लामे लागो छल हेतै। आइ गामबालीक मृत्युक बाद ओकर प्रशंसक कम नै छै, शानसँ आयलि आ शानसँ चलि गेलि। जमाना बदलि रहल छै। गीतक प्रेमी रहय ज्ञानचन। विदेशिया नाच आ नौटंकी मे खूब मोन लागै, एकरा सोलकन्हक विधा मानल जाइ छलै मुदा कुलीन धीया पूता आ नवतूर आगुए जा कय बैसए। विदेशिया नाचक सभटा गीत याद रहै ओकरा। विद्यापति, निर्गुण नचारी ओ ओहुना टेरि दीअय, बाभन सभकेँ खूब पसिन्न पड़ै, बाभनक गाम रहै। मीरा आ कबीरक भजन ओहिना याद रहै ओकरा। मुदा जालिम सिंहक नाच आ गीत लेल मोन अहुरिया काटै, धुरछीया हेतै, साहस नै होइ। मुदा आब गाममे, ओइ गाममे जकर चर्चा सुशील केने छथि, बहुत किछु बदलि गेल छै। बेशी नाच पार्टी सभ बन्द भऽ गेलै, जे छै से हुकहुक करै छै। ज्ञानचनक हरमुनिया, घड़ी आ घोड़ा सोनपुरमेलासँ आबि गेलै। आबो सोनपुर मेला लगै छै, मुदा

हरमुनिया आ घड़ी लगो पासमे भरि साल बिकाइ छै। ज्ञानचनक हरमुनिया, घड़ी आ घोड़ा किछु लोकक आँखिमे गड़ऽ लगलै। मुदा आइक जुगमे से ककरो साधंश नै छै। मिथिलाक बाहर उत्तर-प्रदेश आदि सँ जाटवकेँ घोड़ेपर चढ़ि कऽ बियाह बरियाती आनैपर बरियातीपर पाथर फेकबाक किछु घटना सालमे भइये जाइ छै। फेर गामक किछु बाल-विधवाक चर्चा होइए। आ ज्ञानचन सोचमे डूमि गेल कनियाँ सेहो एक दिन कि (गामबाली)रनदाइ बनती? किरनदाइ नै तँ सकली बनती। आ नै तँ परमेस्सरी बनतीह। आ नै तँ रतनी बनि जेती। मुदा रतनी उढ़रि गेलि। नै कनियाँ किछु नै बनती, ओ अपराजिता छथि, ओ डुब्बी मारि पानि नै पीतीह। अखनो बहुत सुधार तँ नै भेल छै, मुदा तलाक आ विधवा विवाह दुनूक पक्षमे मारिते रास लोक ठाढ़ छथि, तलाक, पुनर्विवाह, विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाह खूब होइ छै। अन्तर्जातीय विवाह भेलापर किछु बर्ख पहिने भरि गाम रसगुल्लाक भोज देबऽ पड़ै छलै, मुदा आब से नै छै, जएह विरोध करै छलै, तकर बालबच्चा अन्तर्जातीय विवाह अरबधि कऽ करै छै। सोनमनि सोचलनिज्ञानचन - सभक हृदयमे अछि, हुनको हृदयमे; मुदा जखन ओ ज्ञानचनकेँ तौलऽ लगला तँ ओ नोंसिक एक कणोक सुरकान नै छल। माने ऐंठी अखनो छै। ज्ञानचनक बियाह ठेङासँ नापि कऽ भेल छन्हिहमरा सभमे सगाइ चलै सोलकन्हमे अहिना होइ छै। - छै, भरिसक कत्तौ कऽ लेलकैज्ञानचन बजैए। - फेर कनियाँक नैहरक कथा, समाजक कथा कहै छथि उपन्यासकार।

ज्ञानचन गौआँक बुत्तापर गाममे मिडिल स्कूल खोललक। रस्ताकेँ ऐल-फैल करबओलक।

गामबालीक मृत्युपर गामबालीक बेटा पनरह बर्खक रहै छै। रामाधार ज्ञानचनक विरोधी रहै। गामबालीक कठियारीमे सात गोटे चाही, बात पसरि जाइ छै, रामाधारक बेटा, ओकरा पीठेपर बैजूक बेटा आ फेर तँ धर्रोहि लागि जाइ छै। झगरौआ बीटसँ बाँस कटि कऽ अबै छै। ज्ञानचनक सऽरा बला गाछी आब अनकर भऽ गेल छै, ओत्तै दाह क्रिया सम्पन्न होइ छै। पुस्तकालयक नाम राखल जाइ छैगामबाली स्मारक पुस्तकालय। -

तँ गामबाली उपन्याससँ मैथिली साहित्य पढ़निहारकेँ की भेटलै आ मैथिली साहित्यकेँ की भेटलै?

गामबाली उपन्यास ओइ युगक एकटा क्रान्तिकारी उपन्यास रहै। समाज बदलि रहल छलै। साहित्यकारकेँ समाजसँ आगाँ रहबाक चाही, मुदा मैथिलीक मुख्यधाराक साहित्यकार समाजसँ पाछाँ छथि। से ओ लोकनि सुशीलकेँ बारि देलनि। गामबाली उपन्यास एक निशाँसमे अहाँ पढ़ि सकै छी। ई उपन्यास एकटा डोक्यूमेण्टरी अछि, समाजक, बाल-विधवाक, ऐंठीक आ संघर्षक चित्र सोझाँमे आबि जाइत अछि।

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

वृद्ध वाचस्पति समावेशी रहथि, तेँ नाटकक वाचस्पतिसँ ओ मेल नै खाइत छथि। शाम्भवीक चरित्रमे स्त्री-विमर्श अछि मुदा भामतीक चरित्रमे से नै अछि। ऐ दू टा कमीक अछैत भामती नाटक मैथिलीक

ऐतिहासिक नाटकक श्रेणीमे सर्वोच्च स्थान रखैत अछि, आ मुख्यधाराक स्लैपस्टिक नाटकक प्रतिरोध करैत अछि। “ईडिपस”, “एलेक्ट्रा” आ “कैस्ट्रेशन” कॉम्प्लेक्स क प्रयोग जे लैंगिक व्यवहार लेल कएल जाइत अछि से समाजक काम लोलुपताक व्याख्या लेल कएल जा सकैत अछि। समाजक गिद्ध दृष्टि भामती कैँ सेहो नै छोड़लक, एकर नाटकमे सम्मिलन आ तकरा महिला द्वारा प्रतिकार करबाक क्षमताक विवरण, ई दुनू तथ्य सुशीलकैँ मुख्यधाराक नाटककारसँ बेशी साहसी आ विशिष्ट बनबैत अछि।

अस्मिता (२०१६) (लघुकथा संग्रह)

बघोतिया सिद्ध करैत अछि जे केना फेक न्यूज पसारल जाइ छै आ बिहारि आनल जाइ छै, आबै नै छै। जइ निश्चिन्तता आ दक्षतासँ कथा आगाँ बढ़ैत अछि से अद्भुत अछि। हमर नवीनतम फोटो, प्रेम-प्रसंग, प्रेम ने बाड़ी उपजय, पिपनीपर नोर ,पुश्त.. पुश्त.. पुश्त, एकटा कलाकारक आत्महत्या, घरमुँहा आ सनकिरबा ऐ सभ कथामे आधुनिक लघुकथाक सभ तत्त्व विद्यमान अछि। आइ-काल्हिक सभ समस्याक इशारा ऐ कथा सभमे अछि, चाहे ओ आतंकवाद हुअय बा फेक एनकाउंटर। गाम सधबा होइत अछि आ अस्मिता अछि नारी विमर्शक कथा। गाम सधबा होइत अछि मे नारी विमर्शक आ पतिक आ बेटाक संग तइमे संग देबाक बात अछि, आ से मुख्यधाराक कन्नारोहटक सुशील द्वारा प्रतिकार अछि; प्रवीरक मायक चरित्र सभसँ बलगर।

भोकाटा अछि विधवा सावित्री आ मंतोरक कथा।

असल बात जड़िअओठा खानगी पढ़ौनीक वृत्ति बला दोकान बलाक राजनीति धन्धाक राजनीति छै।

बाट ताकैत एकटा सेहंता मे महीसक आवेदन पास भऽ गेलै, इसकूलक हाल तँ पूरा देशमे ओहने छै, से ओ ठीक केना हतै।

मात्सर्यमे मनःस्थितिक विवरण करैत-करैत कथाकेँ नीक जकाँ सम्हारैत छथि कथाकार।

विज्ञापनक करामातमे विज्ञापनक कमाल अछि।

मस्जिद- देवकान्तक गुरुकेँ नमाज पढ़ै ले दूर जाय पड़ै छै, ओ गुरुजी लेल मस्जिद गामेमे बनबाबैए, सभक सहयोगसँ। हड़ताल- भोला मैट्रिक पास केलक। चाहक दोकान खोललक। आइ हड़ताल छै। पाइपगनक गोली ओकरा लागै छै, ओ मरि जाइए।

सड़क- गाममे सड़क बनतै। सुकरू चाहक दोकान खोलि लेत, महींस रखबामे बड्डु बेइजत्ती छै, कतबो नाथ कसू, जजाति लपकिये लै छइ। मुदा लम्बोदर बाबू.. नै बनत सड़क। चलू आधा जिनगी तँ बीतिये गेल अछि।

कतहु नहि- गाम नव सन, अनठिया गाम सन लागि रहल अछि। छोटे बाबू ढरि गेलथिन, प्रीतमकेँ दू दिन पहिने कहने रहथिन, पनरह अगस्त दिन रहै लेल, मुदा ओ कोनो बहन्ने बहीन ओतऽ काल्हिये चलि गेल। ओ एत्तै तँ सभटा बुझबे करतै, एहेन गप छपित नै रहै छै। देह सिहरि गेलै।

सभटा रेहल-खेहल- टेनगाड़ी, गप-सरक्का, फेर डकैती। फेर

आर.पी.एफ. केर आयब। ई सभ यात्री तँ बर्खमे एक-दूबेर अबैए, टेनगाड़ीकेँ तँ सभटा रेहल-खेहल छै।

सुशीलक आधुनिकता ऐ मे छै जे ओ नग्र आ गाम दुनूक नीक आ अधला बौस्तुकेँ सोझाँ अनै छथि, ओ नहिये आधुनिक, नहिये पुरातन, नहिये नव बौस्तु बा विचारधाराक मोहमे छथि। सुशीलक आधुनिकता समावेशी अछि, एक दोसराक विचारधारा सँ किछु लेबा, किछु देबामे विश्वास करैत अछि, संगहि कोनो गलतीकेँ झँपबातोपबामे विश्वास नै करैत अछि-, विचारधाराक नामपर सेहो नै। आ तेँ मूलधाराक छद्म समीक्षक गंगेश सन हिनको ऑनर-किलिंग करैत छन्हि। आ तेँ जखन ई पोथी हम समाप्त कऽ रहल म तहियो परिस्थिति बदलल नै छै आ हमरा विदेहक ३९७ छी अंकक सम्पादकीय एना लिखऽ पड़ि रहल अछि।

११७ म सगर राति दीप जरय, दरभंगा आयोजक हीरेन्द्र झा)

(आ अशोक कुमार मेहता

साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष आब) अशोक अविचलक दृष्टि सगर राति दीप जरय पर पड़ल (भूतपूर्व आ ओकरा गिड़बाक प्रयासमे हीरेन्द्र झा केरब्लैकमेलिंग केर शिकार ओ सहर्ष भेला आ टैगोरक १५० म जयन्ती वर्षक साहित्य अकादेमीक कार्यक्रम जे दिल्लीक एकटा संस्था करबेने रहय केर गिनती सेहो करैत नम्बरमे हेरफेर करबाक अपराध केलन्हि, जकरा ओ चलाकी बुझैत छथि। मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष बनलाक बाद लोकमे ऐ तरहक प्रवृत्ति देखल गेल छै, जकर शिकार

रामदेव झा भेला, जे शोधक लेल ख्यात रहथि; चन्द्रनाथ मिश्र अमर भेला, जिनकर पहिल फेजक आन्दोलनी योगदान झँपा गेलन्हि, आब नचिकेतापर ई ग्रहण लागल छन्हि। हीरेन्द्र झा ऐ लगा तेसर बेर ई कुकृत्य केलन्हि अछि, जइमे ऐ बेर कमल मोहन झा आकि मिश्र चुन्नू सेहो हुनकर संग देलखिन्ह। हँ सहसहयोजक अशोक - कुमार मेहता मुदा ऐ कुकृत्यमे हुनकर संग नै देलखिन्ह।

भेलै की?

पूर्व नियोजित षडयंत्र जइमे अशोक अविचलक योगदान ऊपर कहल गेल अछि, मे हीरेन्द्र झा कैँ सगर राति दीप जरय केर सह-आयोजक बनाओल गेल स्पष्ट रूपसँ कहि देल गेलन्हि जे नम्बरमे) (हेरफेर नै करता, फेर कमल मोहन झा आकि मिश्र चुन्नूकैँ तैयार राखल गेल। मुदा सभ चोरिमे एकटा निशान छुटिते छै। अध्यक्ष महोदय बिना कोनो प्रस्ताव एने धड़फड़ीमे बाजि देलखिन्ह जे अगिला गोष्ठी पटना आ तकर अगिला दिल्ली जतऽ साहित्य) मे हएत (अकादेमीक मुख्यालय अछि, आ फेर गप सम्हारलखिन्ह जे से तकर निर्णय पटनामे कएल जायत। कमल (दिल्लीक) तैयार रहथि-मोहन झा आकि मिश्र चुन्नू तैयारे, फटाकसँ चोरिक रजिस्टर आ दीप लेलन्हि हीरेन्द्र झा सँ आ निर्ललज्जापूर्वक हँसबाक प्रयास करैत मुदा ह)ँसी तँ छोड़ू हास्यक पात्र लगै छथिफोटो घिचबेलन्हि। (

प्रतिकार की हुअय?

ई ऐ लगा हीरेन्द्र झा केर तेसर गलती अछि से हुनका तीन सगर

राति लेल बैन कएल जाय, कमल मोहन झा आकि मिश्र चुन्नूक ई पहिल गलती अछि से हुनका एक सगर राति लेल बैन कएल जाय। उपस्थित लोकक बहु-संख्या ११८ म सगर रातिक आयोजक ताकथि। अगिला सगर रातिक नम्बर ११८ रहय आ तकर प्रचार हुअय, जइसँ साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष ई कुकर्म करबाक विषयमे सोचितो डराथि।

नव साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष आ सदस्य लोकनिक कुकृत्य

नव साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समिति अपन प्रचारमे पुरना समितिक लेल ई श्लोक पढ़लन्हि :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥४७.
(श्रीमदभागवदगीता)

जखन-जखन धर्मक नाश आ अधर्मक उत्थान प्रारम्भ हएत हे भरत, तखनतखन ह-म आयब । आ से ततेक (शरीर धारण करब) अधर्म भेलै जे नचिकेता आ हुनकर टीम अवतार लेलक।

आ केलक की?

मासो नै बितलै पहिल बैसकीमे मोनोग्राफ, अनुवाद आदिक बँटवारा भेलै आ टीमक सदस्य सभ अपनेमे सभटा असाइनमेण्ट बाँटि लइ गेल, अपनाअपनी आ लगुआ--भगुआमे, नचिकेताजी देखैत रहि गेला, वरन सहयोगे केलखिन्ह। समानान्तर धाराकेँ स्कोर पहिनहियो शून्य रहै, अवतारी पुरुष सभ तकरा शून्ये

रखलन्हि।

पुरस्कारक राजनीति

नारायणजी दाढ़िमक बदला अनार लिखलन्हि आ बाल साहित्यकार ओ छथि नै, पुरस्कार लेल बाल साहित्य लिखलन्हि। मुन्नी कामतक चुक्का विदेह पेटारमे उपलब्ध अछि, नारायणजी ओइ पोथीकेँ पढ़थु आ निर्णय लेथु जे की ओइ पोथीक सोझाँमे हुनकर पोथी ठठै छन्हि। आ जँ अन्तरात्मामा नै छन्हि तँ हीरेन्द्र झाकमल मोहन झा आकि मिश्र चुन्नू सन निर्लज्जतासँ / पुरस्कार लेथु, हमर अग्रिम शुभकामना। आ जँ अन्तरात्मा नै मानै छन्हि तँ दलदलसँ बाहर आबथु। [विदेह अंक ३९७ सम्पादकीय]

[मिशेल फोको (Foucault)क "अनुशासन संस्था" बा मनोवैज्ञानिक बार्टन आ ह्वाइटहेडक "गैसलाइटिंग" दुनूक लक्ष्य एक्के छै। मिशेल फोकोक "अनुशासन संस्था" अछि, सोझाँबलाकेँ अनुशासनमे आनू आ तइ लेल सभकेँ आपसेमे लड़ाउ, किछुकेँ पुरस्कृत करू आ जे अनुशासनमे नै अबैए तकरा आस्ते-आस्ते माहुर दियौ। गैसलाइटिंगमे सोझाँबला केँ विश्वास दिआओल जाइत अछि जे अहाँ जे यथास्थितिक विरोध कऽ रहल छी से कोनो विरोध नै, ई तँ सभ कऽ रहल अछि, अहाँ तँ विरोधक नामपर विरोध कऽ रहल छी आ से अपन कमी नुकेबा लेल। ऐमे समाजमे वर्तमान आधारभूत कमीक सहायता सेहो लेल जाइत अछि, आ आस्ते-आस्ते टारगेट बताह भऽ जाइत अछि बा पलायन कऽ जाइत अछि।

मिशेल फोकोक सभटा डिसीप्लिनरी इंस्टीट्यूशन "अनुशासन संस्था" जेना साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी, मैथिली भोजपुरी अकादमी, आ साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त कथित लिटेरेरी असोसियेशन सभ मूल धारा लग छै। सगर राति दीप जरय कैँ मिशेल फोकोक परिभाषित डिसीप्लिनरी इंस्टीट्यूशनमे अनबाक प्रयास बहुत दिनसँ कएल जा रहल छै।]

सुशीलक नाटक, कथा बा उपन्यासमे कन्नारोहट नै अछि। जइ कथामे नीक अन्त अछि ओतऽ तँ नहिये जतऽ अधला अन्त अछि तत्तौ कन्नारोहट नै अछि, हँ व्यंग्य अछि। जेना सड़क कथामे- “चलू आधा जिनगी तँ बीतिये गेल अछि”। जेना **हड़ताल** कथामे -पाइप गनक गोली ओकरा लागै छै, ओ मरि जाइए। साँझमे ओकरा शोकमे मौन जुलुस निकलै छै।

से सुशीलक रचना कोनो रस सिद्धान्तपर आधारित नै अछि, ओइमे तत्कालीन चिन्ता छै, ऐतिहासिक नाटकमे सेहो तत्कालीन सामाजिक विमर्श घोसिआयल छै। आ तैँ सुशीलकैँ मार्क्सवादक सोंगरक खगता नै भेलन्हि, मुदा हड़ताल कथा ओ लिखि जाइत छथि। सुशीलकैँ देशमे बढ़ि रहल साम्प्रदायिक वातावरणक चिन्ता छन्हि जे मस्जिद कथाक अन्तमे ओ आनै छथि। ओ संस्कृति आ भाषाक प्रति सचेत छथि। परिवर्तनक प्रति सचेत छथि। चारू दिसुका प्रकृतिक प्रति सचेत छथि, बघोतियामे सेहो आ उपन्यासमे सेहो। मुदा मनुक्ख हुनकर केन्द्रमे छन्हि।

अध्याय २

सिद्धान्तोत्तर (पोस्ट-थ्योरी)

उत्तर-विखण्डनवादमे पोस्ट-थ्योरी (सिद्धान्तोत्तर) आयल।

बीसम शताब्दीक शुरुहेमे रूसमे रूपवाद शुरू भेल। ओ लोकनि ऐ विश्वासकेँ अस्वीकार करैत छथि जे लेखकक विश्वदृष्टिक अभिव्यक्ति साहित्यक रचना छल, वरन् ओ मानैत छथि जे ई अछि एकटा कानून शासित प्रणाली। हुनका सभक लेल शिल्प आ रूप कथावस्तुसँ बेशी महत्व रखैत अछि। ओ सभ मनोवैज्ञानिक समालोचना आ लेखकक जीवनी बा भोगल यथार्थक आधारपर रचना लिखल जाइ छै, ऐ दुनू धारणाकेँ नै मानैत छथि। ओ साहित्यक प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोणक ओकालत करैत छथि आ मानैत छथि जे साहित्यिक भाषा सामान्य भाषासँ अलग होइत अछि, ओकर अलग स्वतंत्र अस्तित्व होइ छै आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्ररूपसँ हेबाक चाही नै कि लेखकक जीवनमे ई भेलै, ओ भेलै; बा मनोविश्लेषणक आधारपर माने ऐ साहित्यमे हैमलेट अपन कक्काक हत्या करैमे हिचकिचाइत अछि मुदा अनकर हत्या करैमे ओ नै हिचकिचाइत अछि कारण ओ स्वयं पिताक हत्या करऽ चाहैत छल आ कक्काक हत्या केनाइ ओकरा अपन हत्या केनाइ सन लगैत छै (फ्रायड); ऐ तरहक मनोविश्लेषणक आधारपर नै वरन् साहित्यिक भाषाक जे पाठ छै, तकर आधारपर एकर विश्लेषण हेबाक चाही।

फ्रांसक अल्बर्ट कामू जीवनक अयुक्तता, जइमे संकट आ भ्रम

चारूकात पसरल छै, मे आस्थाक सोंगर लऽ लऽ चलैबलाकेँ “दार्शनिक आत्महत्या” केनिहार कहै छथि।(१९४२) सुशीलक साहित्यमे अहाँकेँ कत्तौ सुशील द्वारा ऐ तरहक दार्शनिक आत्महत्या नै भेटत। एकटा कलाकारक आत्महत्यामे सेहो नै।

फ्रांसक दार्शनिक रोलेण्ड बाथ्स साहित्य रचनाक बादक स्थितिकेँ लेखकक मृत्यु कहै छथि, आ कहै छथि जे पाठ लेखकक की उद्देश्य रहै ओइसँ नै वरन् पाठक ओकर की व्याख्या करैए, तइसँ निर्धारित होइए।(१९६७)

फ्रांसिस फुकुयामा कहै छथि जे पश्चिमक उदार-गणतंत्र विरोधी विचारधारा (माने साम्यवाद आ गणतंत्र) क संघर्षसँ निकलल अन्तिम विकासक्रम अछि, आ किएक तँ आब एक्केटा विचारधारा अछि तेँ ई इतिहासक अन्त अछि। (१९९२)

पाठककेँ कोनो रचना नीक लगै छै आ कोनो रचना नीक नै लगै छै, आ तेँ साहित्यक समीक्षा पाठक करत कोनो वाद नै। नव-नव सिद्धान्त पुरनके सिद्धान्त सभक नूतन रूप अछि, नव ढ़ंगसँ पुरनके सिद्धान्त सभक रिमिक्सिंग आ रिपैकेजिंग कएल जाइत अछि। रचनाक पाठ मात्र महत्त्वपूर्ण अछि, ओइले कोनो वाद नै चाही। आ ऐ तरहे तार्किक प्रत्यक्षवाद आ नव तार्किक प्रत्यक्षवाद क दृष्टिकोण दिस पोस्ट-थ्योरी आयल अछि।

सुशीलक रचनाक समीक्षा अही पोस्ट-थ्योरीसँ सम्भव भेल अछि, ओना नारीवाद आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक समीचीनता पोस्ट-थ्योरीक अनुरूप सेहो आबि गेल अछि।

Pothi.com

नित नवल सुशील

गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल सुशील

गजेन्द्र ठाकुर